॥ श्रीः ॥

त्रियाचरित्र.

अर्थात्

(रक्षपाली.)

जिसमें

नाना प्रकारके उदाहरणों समेत स्त्री पुरुषों

के प्रेमलुब्ध चरित्र सुजनोंके सचेत

होने के लिये वर्णित हैं ।

जिसको

महादेव लालजीने लिखा और प्राचीन

चरित्रोंको समन्वितकर,

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बम्बई

निज "**श्रीवेङ्कटेश्वर**" यन्त्रालयमें

मुद्रित कर प्रकाशित किया.

शके १८२७, संवत् १९६२.

श्रीगणेशाय नमः ।

त्रियाचरित्र ।

अर्थात्

रक्षपाली.

मैं मौजा सु...जिला बलियाकी रहनेवालीहूं मैं एक खानदानी मनुष्यकी लड़की हूं और मेरे घरमें बड़ी भारी जमीनदारी होती है जब मैं छोटीसी लड़कीथी उसी समयसे मुझको सब लोग प्यार करनेलगे और बड़ी होनेपरभी लाड़ली होनेके कारण मैं दरवाजेपर जाया करतीथी और लड़कों के साथ खेलाकरतीथी बल्कि मुझको यह भी याद है कि, बहुत लड़के मुझसे प्रेमकी बातें किया करतेथे और सब चाहतेथे कि, हमहीसे रक्ष-

पाली मेल रक्खे परन्तु ज्योंहीं मैं कुछ अधिक तरुण हुई कि,मुझको मेरे बाप माँ घरके पिंजड़ेमें बन्द कर दिया और बाहर आनेसे एकदम रोक दिया जब मैं शादीकी अवस्थापर पहुँची तो मेरे लिये बड़े धूम धामसे दूलह खोजा गया लेकिन् भावीकी आज्ञासे शादी बहुत निकट हुई याने जमुआ देहातमें। सु...और जमुआ ये दोनों स्थान बलिया जिलामें और बलियाके निकट हैं मेरे बापका नाम र...सिंह है जोकि अपने जीने भरमें सब आवश्यक वस्तु मुझको बिदाईके समय दिया और अच्छे घर शादी की, परन्तु मेरे भाग्यमें यही लिखाथाकि,मैं अतिकठोर विपत्तिमें पड़ू जिसको मैं स्वयं बयान करतीहूं और अपने दुःख और सुखको स्मरण कर २ विलाप करती हूं जब मेरी शादी हुईउस समय मेरी उमर ११ ग्यारा वर्षकी थी और मैं अपने ससुरालमें जो कि एक देहात है

"जंगलमें गुलाबका फूल" जानीगईथी। शादीमें मेरी बिदाई ससुरालको नहीं हुई और मैं कहचुकी हूं कि,मैं लड़कपनहीसे रसिकथी तोः—

दोहा—रसिकअलीकोमलकली, तापरभयोविवाह।
प्रीतम बिनु कैसे रहूं, मदन बनो जब शाह॥

स्त्रियों और सखी सहेलियोंकी बातें और उनके साथ उनके पुरुषोंकी घातें मेरे रसीले प्रेमसे सींचे हुए कोमल हृदयको वेध रही थीं लेकिन् मैं करूं तो क्या करूं भीतरही आहकी ठंढी श्वास भरतीथी परन्तु जब मैं मदनके बाणको नहीं सह सकी तो दिलमें यह सोचा कि, कोई यत्न करना चाहिये जो दूसरे पर प्रगट नहो और मेरी मनोकामनाभी सिद्ध होजाय याने मेरा गौना शीघ्र होय अतएव मैं देवताओंकी सेवा करनी उचित समझी जिससे मैं अपने पतिके घरजाय उनके संग प्रसंग करूं और दुनियेका मजा लूटूं।

आपलोगोंपर विदित है कि, मेरा मकान गंगा-के निकट था अतएव मैं गंगाजीकी सेवामें प्रवृत्त हुई और एक सखीके साथ, जोकि मेरी बहुत प्रेमिन थी और मेरे दिलके हालको जानती थी लेकर स्नान पूजाके लिये जातीथी और यही गीत गातीथी—

गीत भुजपुरिया ।

ये गंगा मइया तोके चुनरी चढ़ैहौं, जलदीसे करदे गवनवां ।

अन्तरा—टिकुली देवों सेंदुरा देवों तापर देवों छवनवां ॥ १ ॥ तोहरे कृपासे जाई गंगा मय्या सइयां के जल्दी भवनवां ॥ २ ॥

गंगाजीकी कृपासे मेरा भाग्य उदय हुआ और मेरे गौनेका दिन रक्खा गया जिससे मैं मनही मन अतिहर्षित होने लगी। मेरी सखी कहने

लगी कि,लो प्यारी जी ! तुमभी अब प्रेमनगर के प्रसंग वाटिकाकी हवा खाने चली अब मन मानी क्रीड़ा करना, ईश्वरकी कृपासे युगल प्राणी अतिभोग विलासमें आनंद रहें परन्तु प्यारीजू ! इस गरीबिनको मत भूलना॥

मैंने अपने मनमें सोचा कि,जो सखी मेरे साथ बराबर रही और खेलनेके उपरान्त जिसके द्वारा मुझको रस पक्ष पर बहुत कुछ मालूम हुआ, जो मेरे भलाईकी चाहनेवाली सदैव रही उसको अवश्य मैं अपने साथ ले चलूंगी॥

मैंने कही कि, हे सखी ! मैं तुमको कभी नहीं भूलसकती लेकिन् अयसखी ! पर जानेपर तुमभी अपने प्रीतम प्यारेका हाल लिखते रहना॥ मैं लज्जित होतीहूं कि, मुझको अपने मुखसे अपना गुण कहना पड़ताहै। मैं अपने लड़कपनहीसे स्यानपनमें कुछ चतुरथी और एक तिरछी निगाहोंके

भालेसे बहुतोंका कलेजा वेधतीथी, बहुत लोग मुझको दिलसे चाहतेथे, मैं एक २ बलमें सौ २ बल खातीथी देखनेवालोंके दिलको मछलीकी नाईं बझातीथी और मेरा गुमान यहथा कि ईश्वरने खूबसूरती मेरेही लिये बनाईहै और मैं अवश्यचाहतीथी कि, किसी चतुर पुरुषको अपनी चालाकी दिखलाऊँ ॥

दोहा—मैंतो सोचूँऔर विधि,विधना की विधिऔर।
जानि पड़त सुख दुखनहीं, होत और का और॥

लेकिन् हाय विधना! मेरेही कर्ममें यह लिखाथा कि, मुझको ऐसा पुरुषमिले। हाय! मैं ऐसीचतुरा और मेरा पुरुष ऐसा मौगा!कुछ नहीं यह कर्मका लिखा है? पाठको! जब मैं ससुराल आई, क्या देखतीहूं कि, मेरे स्वामी निष्कामी तो जो मिट्टी स्त्रियोंके छांटेसे बचीहै उसीके बनेहैं इनका नाम हर प्रसाद सिंहथा। इनके दो भावजथीं जिनके कह-

नेमें यह बराबर रहा करतेथे और उनहींके साथ घरघुरियामें अपने समयको व्यतीत करतेथे ॥

पाठको ! अब हमारा क्या हालथा कि, दिनभर अफसोसकी ओखलीमें रोदनके मुसलसे अपने कर्मको कूटतीथी, रातके समय छातीपर हाथ रख पड़ी रहती थी, और जब मदन सतावे तो ठंढ़ी श्वास भरकर यही कहतीथी कि, हाय! ईश्वर कौन यत्नकरूं हेभगवन् ! मैंने कौनसा अपराध किया कि, यह बदला चुकातेहो ॥

मेरे स्वामीजीकी दोनों भौजाइयां मुझसे रात दिन झगड़ा किया करती थीं और मुझको हरतौ-रसे सतातीथीं और मेरे स्वामीजी जिनपर मेरे बिल्कल निर्वाहका भरोसा था मुझसे मुख भर बोलतेभी नहींथे। इस:समयका दुःख अब मैं कैसे जनाऊँ "जानेली चिलमकी चढेली अँगारी" ॥

अकसर ऐसा हुआ करताथा कि, और दोनों

भाइयोंको उम्दा खाना पकताथा और मेरे स्वा-
मीके लिये खराब खाना पकताथा और यह खा-
लिया करतेथे। मुझको भी बुरा खाना मिलता
था तो मैं इन्कार कर जातीथी लेकिन् अफसोस
की बातहै कि, मैं कुछ नहीं कर सकतीथी। मेरे
स्वामीजी ऐसे कादर पुरुषथे कि, कुछ भी नहीं
कहतेथे इन बातोंको देख कर मेरा कलेजा
दर्द कर उठताथा कि, हाय ईश्वर! मेरे स्वामीका
यह हाल और यह मुझसे ऐसेरहें? अगर मेरेस्वा-
मी मुझको बाहर निकाल लेजाते तो बेहतर होता
लेकिन् वह तो रसरंगको अपने दिलपर ठहरने
नहीं देतेथे। बाजे पुरुष ऐसे चतुर होते हैं कि, दूस-
रीस्त्रियोंको भी मानतेहैं लेकिन् यह तो अपनीही
स्त्रीसे नहीं प्रेम रखतेथे भाई घर बैठे चैन करतेथे
और इनसे कहतेथे कि; जाओ खेतकी खबरलो,
भला मुझको स्त्री होनेका सुख ऐसी हालतमें कब

प्राप्त होसक्ताहै मेरी ऐसी अगर दूसरी स्त्री होती तो फौरन जहर खाती या डूब मरती नहीं तो बाहर तो अवश्यही निकल जाती पाठको ! मैं भी बाहर निकल गई जिसका वृत्तान्त मैं नीचे लिखतीहूं पाठको! मैं तो पहले बयान करचुकीहूं कि,ऐसी अवस्थामें कौन स्त्री मदनके बाणको सहसक्तीहै और दूसरी स्त्रियोंका भोग विलास आँखोंसे देख सक्तीहै मेरे तो चाहनेवाले हजारोंथे और जिनके नजरसे मैं गुजरतीथी उनके दिलपर मेरीसूरत नाचती थी और वे मेरे घरके सामनेकी सड़कको खोद डालतेथे एक बार भी उधर चन्द्रमुखीको देखूं मैंतो बड़े घरकी लड़कीहूं मेरा किसीके नजरमें पड़जाना सूर्य्यका पश्चिमसो निकलनाथा लेकिन् जो विधाता लिख देताहै उसको कौन टार सक्ताहै अब मैं भी सोचा कि,जिन्दगीके बहारका समय व्यर्थ बीतने चाहताहै यदि मैं कोई दूसरा उपाय नहीं करूं

आखिरकार मैं अकेली खिड़की पर जाकर बैठने लगी और पुरुषोंके निगाहमें पड़ना चाही मेरे सुन्दरताका हाल तो बहुतोंपर प्रगटथा और उस रास्तेमेंसे जो जाताथा एक नजर मेरे कोठेकी तरफ अवश्य देखलेता था ॥ अचानकसे एक पुरुषकी नजर तो पड़ी लेकिन् उसके वास्ते मुझसे गाली निकलती है । क्योंकि उस पुरुषने मुझको बहुत धोखा दिया और मुझको मिट्टीमें मिला दिया । ऐसेही पुरुष होते हैं कि, और पुरुषोंके सच्चे प्रेमके नाममें धब्बा डालतेहैं ॥ खैर अब इस पुरुषके साथ जो हुआ सो सुनिये ॥

यह पुरुष दूसरेदिन उसीसमय आया जिस समय मुझको खिड़कीपर देखाथा और मेरा तो अब रोज़का काम था कि, जाकर खिड़कीपर बैठूं जब वह पुरुष आया तो मैंने एक पत्र लिख कर गिरा दिया इससमयका हमारा पढ़ना लिखना

काम आगया और चतुर स्त्री अवश्य पढ़ी लिखी होतीहैं । मेरे पत्रमें यह लिखाथा ॥

चौपाई ।

र. रसिकाप्रिये । सुन विनती मोरी ।
क्ष. क्षमाकरो दुख लिखत निहोरी ॥
पा. पाले पुरुष रहित रसकेहूं ।
ली. लीजो काम कछुक हमसे हूं ॥
प. पकरि बाँह निज दासी राखो ।
र. रसिक प्रिये रस मेरो चाखो ॥
कृ. कृपा करहु मत तोड़हु आसा ।
पा. पाव धरूं अब करो विलासा ॥
हो. होनी मेरी जो थी होनी ।
तुम्हरे मिलनेसे अब खोनी ॥

हे रसिकप्यारे प्राणहमारे ! मैं अति निगोड़ेके पाले पड़ीहूं जिसमें कुछ भी पुरुषका लक्षण नहीं, मैं निकल जाऊँ तो बनै नहीं और काम सताता है फिर क्या करूं । प्यारे मैं तुमको

बहुत दिनोंसे चाहती हूं लेकिन् यह ठीक है-
दोहा-कारज धीरे होतहै, काहे होत अधीर।
समय पाय तरुवर फरै, केतो सींचो नीर॥
इस पत्रका उत्तर अब मुझको कैसे मिले ? अब बिना सखीके सहाराके किसी प्रकारसे काम नहीं निकल सकता॥ उसी नियत समयपर उन्होंने एक कागज मुझको दिखलाकर रास्तेमें गिरा-दिया । मैंने सखीसे निवेदन करके कहा कि, ऐ स-खी ! गोइयां ! मेरा एक पत्र उड़कर सड़क पर जा गिराहै उसको लादो सखीने तुरन्त पत्रको लाकर बहुत चालाकीसे मेरे हाथमें रख दिया मैं उसको लेकर एक कोठरीमें चलीगई और पढ़ने लगी उसमें यों लिखाथा-
दोहा-प्यारीजी मोहिं तुमबिना, पड़तनहींअबचैन।
दिन सोहातनहिंकामकुछ, रात न आवै शैन॥
प्यारीजी ! अब जानिये, हमको अपना दास ।
कृपादृष्टि जो कीजिये, रखिये अपने पास ॥

हे प्यारी ! मैं तो आपके चरणोंकी धूरि बनके रहूं पर ऐसा भाग्य कब होगा कि, आपका दास बनकर आपकी सेवामें निरत होऊं ॥

मैं बहुत आनन्दित हुई कि, अब मुझको कुछ सुख प्राप्त होगा लेकिन् यह दरपरदे विपत्तिथी ॥ अब मैं इनको सखीके द्वारा बुलवाना चाही। आप लोगो पर विदित है कि बड़े पुरुषोंकी हवेलीमें पीछे एक खिरकी होतीहै जिससे जनानेके बाहरका आने जानेका रास्ता होताहै॥ अब प्यारे नवीन पुरुष मेरे लिये बहुत कुछ भेजनेलगे और मेरी सखीसे बहुत मेल रखने लगे और अब पत्र रोज आने लगा अन्तमें एक दिन ऐसा हुआ कि, जब सब सोगयेतो मैंने सखीसे यह बात कही कि, जाव मेरे प्राणप्यारे को चुपकेसे बुला लावो।सखी बड़ी चतुरथी उनको रात गिरेपर बुलालाई लेकिन् प्रथम दिन होने के कारण मैं बहुत संकोचसे बोलती थी यद्यपि

मैं यही चाहतीथी कि, इनको गलेसे लिपटालूं॥ अबतो दूसरे दिन लपटाई लिया और मनभर गोदमें लेकर वैकुंठको झूँठा किया। अब प्रतिदिन वैसाही हुआ करे कि, नये स्वामीजी आया करैं और गहरी २ बातें किया करें, मैं भी अपने पतिसे स्नेह कम करने लगी बमूजिब शेरः—

अलग उनसे यों रहना और छुटना ॥
ये ऊपरही ऊपर मजा लूटना ॥

लेकिन् अब हमारी दुर्दशा शुरू हुई और मैं एक दिन उनसे बातें करते घरमें पकड़ी गई। मेरा जो हाल होता वह तो रुक नहीं सकताथा लेकिन् ठहरे मेरे प्यारे मैंने उनको अपने पैरका एक कड़ा जोकि चांदीका था और अपने गलेकी हँसुली देकर कहा कि, तुमभागो और मैं चोर २ पुकारूं जिसमें मैं इस बदनामीसे बच जाऊँ कि लोग समझें यह नकि यह इसका दोस्तथा ॥

यह मेरे दोनों गहने लेकर भागे और ईश्वरकी कृपा से भागही बचे। पीछे तो यह आफत पड़ी कि, मैं कुछ कहूं लोग यही कहैं कि, तू उससे मिली है। मेरा गुजारा होना पहलेसेभी कठिन हुआ और सिवाय इसकेकि, मैं उसको लेकर निकल जाऊं कोई दूसरा उपाय सूझ नहीं पड़ा सुतरां मैंने उनको एक पत्र इस ढांचेका लिखा कि, मैं अब बहुत बद-नाम होगई और यहां निर्वाह होना कठिन है। मैं आपहीकी वजहसे बदनाम हुईहूं और अब आपसे दिलभी लग गया उचित है कि मुझको बुलाकर अपने पास रक्खो, प्रेमका निर्वाह ऐसेही करना चाहिये अब हमारा तुम्हारे विना रहना कठिनहै॥

इस पत्रीको मैंने फिर उसी सखीसे भिजवाया जो पहलेसे हमारे काममें तत्पर थी और इस पत्रका उत्तर यह आया कि, यदि तुम अपना सब गहना लेकर आवो तो मैं तुमको ले चलूंगा

गहना मेरा सब करीब २ सोनेका था लेकिन् मेरे सब गहने छिन गयेथे और मैं लाचार होकर और आशा तोड करके शायद मेरे प्यारे मुझको विना गहनाके न लेजाँय मैंने उनके पास फिर पत्र लिखा कि, स्वामीजी मैं आपकी हूं आपके वास्ते जब जान हाजिरहै तो गहनेको कौन पूंछे लेकिन् स्वामीजी मेरे गहने बिल्कुल छिनगयेहैं मैं आपसे कब असत्य कहसक्तीहूं और अगर आप न विश्वास करैं तो मेरा कर्म फूट गया ॥ मैंने इस पत्रको उसी सखीके हाथ भेजा और कुछ जबानी भी कहलाया और कहा कि, इसका जवाब जल्द ले आना ।इधर मैं ईश्वरसे मनाती थी कि, शरणमें रखलो ।

इस दफे उन्होंने पत्र नहीं लिखा लेकिन् यह कहला भेजा कि, उनसे कहदेना कि मैं फलाने जगह पर रहूंगा वह आंज आधीरातको आवें । लेकिन्

होना तो कुछ और लिखाथा, मैंने इस पुरुषपर बहुत विश्वास कियाथा कि मुझको निश्चय ले चलेगा। लेकिन् हाय ईश्वर! मेरा दिल सन्नहो जाता है जब मुझको वह समय याद आता है बहुत आनन्द हुई और तयारी करने लगी कि अब चलूं।जब आधीरात हुई तो मेरा जितना कपड़ा था तोशक, तकिया इत्यादि जो कुछ था सबको गुलेट कर चारपाईपर बांध छोड़ा और उस परसे एक दो बोतल मिट्टीका तेल डालकर आग लगादिया और मैं उस स्थानको जहांपर मैं बुलाई गईथी रास्ता लिया पीछे मैं नहीं जानती कि, क्या हुआ।

लेकिन् जब मैं उस स्थानपर आई जहांकि सखी बताईथी वहांपर कोई नहींथा और कारीअँधियारी बड़ी डरावनीथी हाय! ईश्वर! अब मैं कह जाऊं और क्या करूं,अबतो कोई सहारा नहीं मिले

घर लौट जाऊं तो रहने नहीं पाऊं और इधर धोखेकी टट्टीसे काम पड़ा अब न मरनेकी न जीनेकी "भइ गति सांप छछुंदर केरी" उस समय मैंने भगवान्को याद किया और सोचा कि, डु... एक शहरहै वहीं अब चलूं ॥

यहांपर करीब आठबजे दिनको बारियोंके टोलेमें पहुँची । जहांपर न मुझको कोई जाने न पहिंचाने और भूख इस जोरसे लगी कि, मैं नहीं सहसकी । मैं एक बारिनके घर जिसके यहां कोई मरदाना नहींथा तहां गई इस औरतका नाम शिवटहलबहूथा। यहभी कुछ चतुरथी और नाऊ बारी इसमें प्रसिद्ध भी होते हैं ॥

यहां पहिले मैं अपना पछुआ बेचकर १॥ रु० लाई और पेटकी आग्नि बुझानेके लियेकुछ खाना खाया। घरसे निकलनेके समय फटा कपड़ा पहिननापड़ा था और अब मुझको फटे कपड़ामें रहना पसन्दन हीं पड़ा अतएव मैंने एक अच्छीसी सारी शिवटहल

बहूसे खरीद कराई और दिनकाटनेके लिये पहिन लिया यदि यह कपड़ा मेरे शरीरसे बहुत तुच्छ मालूम होताथा लेकिन् क्या करूं अब घरके फुलकों का खाना और कमखाबकी सारी कहाँसे लाऊं जोकि बड़े अमीरोंके घरमें साधारणमें था॥ पाठको ! मेरे घर दो हाथी आठ दश घोड़े और इकतीस बैलथे। भारी जमींदारी होतीथी लेकिन् मेरे कर्ममें यही लिखाथा कि, घर २ की कुतिया बनूं और रानी होनेके बदलेमें अब चारानीभी होना कठिन है। अब तो मेरी कुछ अवस्थाभी गिरी है कोई पूछे कैसे एक तो बड़े लोग बदनामी से डरते हैं और दूसरेः—

दोहा—यौवन था जब रूप था, गाहक थे सबकोय।
यौवन रूप गँवायके, बात न पूछे कोय॥

शिवटहलबहूसे और एक पुरुषसे बहुत मेलथा जिसका कुछ संक्षेप वृत्तान्त मैं बयान करे देतीहूं

इनका नाम क.लालथा औरयह अपने लडकपनमें घर छोडकर बाहर निकल गयाथा, यह नहीं मालूम कि इनका बाहर जाना किस कारणसे हुआथा यह करीब पैंतीस वर्षके ऊपर होनेपर घर आये मुझको यह नहीं मालूम कि, कुछ रुपयाभी साथ लायेथे अथवा खाली हाथ आयेथे लेकिन् इसउमर तक इनकी शादी नहीं हुईथी और मर्द होनेसे यह निश्चय अनुमान किया जा सकताहै कि, दूसरोंका घर सो यह किये होंगे मेरे देखनेमें यह इस फनमें बड़े चतुर देख पड़ेथे क्योंकि जबकि पुरुष ऐसे हालतमें होते हैं कि, उमर गिरनेतक शादी नहीं होती तो अवश्य इस काममें पड़नेसे ये लोग स्याने होजाते हैं. यह जब अपने घर आये तो इनका यही काम था कि स्त्री पुरुषोंको मरीच देश भेजा करतेथे इस तिजारतमें इनको भी कुछ मिलजाताथा. यह एक अच्छे

कद्के पुरुषथे गोरा वदन जुल्फ रक्खे हुए थे और आंखें रसीली थीं उसपरभी सुरमा दिया करतेथे और उसपरभी सुन्दर होनेसे मुझको भी पसन्द थे यही लाला थे जो बाहरसे आयेथे ये अकसर शिवटहलबहूके पास आते जाते थेऔर उससे कह दियाथा कि, यदि कोई सुन्दरी रसभरीका सबील तुमसे होसके तो मेरे लिये परिश्रमसे नहीं भागना जब शिवटहलबहूने मेरा हाल पूंछा तो मैंने अपना हाल आदिसे अंत तक कह सुनाया जिसपर उसने मुझसे यह बात कही कि, यदि तुम अंगीकार करो तो मैं तुमको एक आदमीको सुपुर्द करदूं जोकि तुमको अपने प्राणके तुल्य मानकर तुम्हारी बहुत खातिर करेगा और यह उससे भला होगा कि,तुम वेश्याकी नाईं अपने दिनको बितावो और दशका मुँह देखो कि कौन आवेगा इस बातसे तुम्हारी बदनामी भी

होगी और सुखभी प्राप्त नहीं होगा और एक आदमीके भरोसे घरकी स्त्रीकी नाईं रहनेसे बहुत कुछ प्राप्त होता है.

मैंने अपने दिलमें यह विचार किया कि, अब मझको घर जाना तो है नहीं और विना खाने पीनेके रह सकती नहीं मेरे पास अपना गहनाभी नहीं है कि बेंचकर खाऊं और कोई जान पहँचान काभी नहीं है जिसके पास जाकर अपना दुःख रोऊंगी और जाऊं तो कौन मुँह लेकर बड़े घरकी लड़की हूं वेश्या बनूं तो बाप दादाकी बदनामी होगी इससे मैंने भी यही उत्तम विचारा कि, एक का बनकर रहनेसे आदर अधिक है बनिस्बत दशके बननेके,अतएव मैंने उससे कहा कि,जो तुम उचित समझो सो करो पर इस बातका ख्याल रखना कि, जिसमें मैं अच्छेके पाले पड़ूं और तुम्हाराभी गुण गाऊं ॥

बारिनतो बहुत खुश हुई कि, दोनों मर्द और स्त्री मुझसे खुश हुये और दोनोंका काम निकला वह चली गई और क...लालको बोलालाई। मैंतो निकली हुईथी और इस समय निज कार्यथा कि कोई रहने की जगह अलग मिले। तो फिर कैसे खेल २ कर बातें करूं अगर विना गर्ज इनसे मुलाक़ात होती तो वह तिरछी २ नजरोंसे इनको घायल करती कि, यही मेरे पैरों तले पड़कर वशमें होते लेकिन् ईश्वरका चाहना तो कुछ और था। मैं नीचे शिर किये हुये बैठीथी और जो बात मुझसे पूछी गई मैंने साफ तो नहीं बतलाई लेकिन् कुछ उनपर जाहिर किया कि मैं यहीं रहूंगी॥ वह तो मुझको देखतेही परी समझकर प्यारी कहने लगे और अब यह सलाह ठहरी कि आज रातको मुझको उनके मकान पर उनकी जान बननेके लिये जाना पड़ेगा॥ दिनको मुझको ताजी मिठाई

पूड़ी आचार दही खानेके लिये बाजारसे मँगवा दियागया अब पूरी तौरसे क...लालकी होगई-अब मैं यह सोचतीथी कि देखें यह लाला भी मुझको नये स्वामीके तरह धोखेमें न डालें तो मैं और कौड़ीकी तीन २ होजाऊं लेकिन् ईश्वरकी कृपासे यह प्रेम रसमें पूरे भीने हुये थे और इनकी शादी नहीं हुई थी इस कारण यह मुझको जान के बराबर समझतेथे। मैं रात होनेके इन्तजारमें थी जबतक एक पुरुष बारिनके नहीं रहने पर आया और चिल्लाने लगा कि "पत्तल बाटेहो" मुझको बोलना नहींथा और बारिनके घर सब घुस जाते थे यह आदमी मेरा आहट सुनकर बारिनके धोखेसे घुस आया, यह वक्त ठीक गदह बेरथा और मैं इन्तजार में थी कि लाला जी आवें और मुझसे लेजानेकी बातें करें जबतक क्या देखतीहूं कि एक छैलालड़का घुसा आताहै । मेरे पैरों

पर २) रुपया रख दिया और मुझसे पूछने लगा कि आप कौनहैं ?। रुपयाकी जरूरत मुझको बहुतथी मैंने फौरन् जवाब दिया कि, तुमको क्या काम कि मैं कौनहूँ अवसर भलाहै अपना काम करो और घरका रास्ता लो। लड़केने भी सोचा कि, यह यहींके किसी बड़े घरकी लड़कीहै कोई काम के लिये आई है मुझको अपने कामसे काम॥ जब बारिन घर पर आई तो मुझसे पूंछी कि, कोई आयाथा, मैंने साफ जवाब दिया कि, अभीतक तो कोई नहीं आयाहै अगर कोई आता तो मैं छिपाती क्यों। बारिनने कहा कि एक लड़का मुझसे पूछताथा कि तुम्हारे घरमें आज कल्ह कोई सकसोरीका आयाहै तो मैंने उससे कहदिया कि, हां मेरे फुआकी एक लड़कीहै॥

लाला साहेब काहेको आवेंगे थोड़ी सी और रात जानेपर बारिनने स्वयं कहा कि, चलो अब

तुमको लालाके घर पहुँचा आऊं मैं उसके साथ होली और गली २ चली, चलते २ लालाके मकानपर आई लाला पहलेहीसे चौकन्ने होकर बैठेथे और हम लोगोंको देखकर फौरन् बाहर निकलआये और बारिनको एक कोठरीके तरफ इशारा करके कहदिया कि जाव। बारिन मुझको लेकर कोठरीमें पहुँची और उसमें मुझे बैठाकर आप बाहर चली आई और अपने घर गई तब लालाजीभी भीतर आये और मैं क्या देखती हूं कि, एक चार पाईपर साफ तोशक चादर बिछीहै उसपर तकिया लगाहै और ताक पर पूडी दही मिठाई वगैरह बहुत चीजें सजी हैं और एक ताकपर एक बोतल शराब खाने खराबका और एक गिलास रक्खाहै। लाला जीने मुझसे पूंछा कि प्यारी तुम शराब पीती हो मैंने जवाब दिया कि, नहीं प्यारे मैं नहीं पीती फिर

उन्होंने शराब पी लिया और मैंने दो तीन दिनकी भूख खूब मिटाई। खा पीकर हम लोग दोनों आदमी एकही चारपाई पर सोरहे और बहुत खुशीसे रात कटी सुबह होते मेरे प्यारेने मुझसे कहा कि, मैं सब चीजें तुम्हारे आरामके लिये मौजूद करे जाता हूं दिनभर तुमको इसी कोठरीमें रहना होगा जब तक मैं दूसरा इन्तिजाम करता हूं यह कहकर वह मुझको ताला बंद करके चले गये और मैं उसी चारपाईपर लेटी रही दिन भर मुझको चुपचाप रहना पड़ा और फिर रातको प्यारे आये और हमसे यह कहा कि, मकानका इन्तिजाम अभीनहीं किया गया और फिर रातभर वैसेही कटी जैसे कि पहले बीती और तीसरे दिनभी यही हालथा मेरे प्यारेने अब यह सोचा कि मैं इस बातको अपने घरमें जनाऊं यदि मेरी प्यारीको भीतर बुलाकर रक्खे तो अच्छा, पाठको! यह बात जब औरतोंपर

प्रगट हुई कि एक अच्छे कायस्थकी लड़कीको...
कलालने बाहर लाकर रक्खा है उस रातको दो चा
औरतोंने मेरे पास आकर मेरा हाल पूंछा और मैं
भी भली भांति कायस्थकी लड़की बनकर बा
बनाईं क्योंकि पहलेही सलाह हो चुकीथी.दूस
दिन मुझको हवेलीमें बुलानेकी तैयारी ह
रही थी कि यह बात लड़कोंपर जाहिर हु
और लड़के बन्दरके स्वभाव होते हैं आक
पहले दरवाजेके सुराखसे झाँके और आदम
की आहट पाकर सोर मचाने लगे कि, रे भा
इसमें कौनहै इसपर दो चार लड़के जमा हु
और अन्दर धूर फेंकने लगे यह खबर कानो का
बढ़ती गई और इस दरजेको पहुँची कि छो
से बड़ोंके कानतक खबर ली.

क... लालके बदनामीका दरवाजा खुलनेल
करीबकरीब दिनभर लड़कोंने शोर मचाया औ

घर में धूर फेंका किया, मैं भीतरही भीतर काँपतीथी कि, हे ईश्वर ! क्या करेगा और हमको किस हालतको पहुँचावेगा ॥

दोहा-यदपि चतुर थी मैं बहुत, सब चरित्रका मूल॥
पडने पर पर आपदा, सभी गई झट भूल ॥

मैं मनही मन पछतातीथी कि, मैं काहेको घर छोड़के इस दुर्दशामें पड़ीहूं यदि यह हाल घरपर होता तो बदनामीसे तो बचती लेकिन् लिखातो ऐसाहीथा दूसराहो सो कैसेहो ॥ रातको लाला साहेब खुश होते हुये आये कि, चलकर प्यारीसे मिलें लेकिन् आदमी शोचताहै और तथा होताहै और घर पर आये और मेरा हाल सुनकर बहुत क्रोधित हुये । उनसे लोग पूँछने लगे कि, क्यों जी घरमें किसको लाये हो इन्होंने जवाब दिया कि मैं लाऊँ किसको चूहे इत्यादिकी आवाज होगी और मनमें यह मनातेथे कि हे ईश्वर ! क

शाम होगी, कि मैं प्यारीको घरमें लेजाकर रक्खूं॥

शाम होनेपर मुझको घरमें लेगये लेकिन बाहर शोर होनेसे भीतरकी औरतें भी मुझको लेनेसे इन्कार करतीथीं लेकिन् किसीतौरसे रहने दिया और मैं ईश्वरको धन्यवाद देकर नम्रतासे रहने लगी लेकिन् आठ दश दिनके बाद फिर सब लोगोंकी यह सलाह हुई कि, भाई लोगोंमें खटपट होगी बेहतरहै कि क...लाल इनको लेजाकर दूसरी जगह रक्खें॥हमको अब गांवमें जानेकी तय्यारी हुई गांवके दक्षिण तर्फ एक मकान किराया लिया गया और मैं जाकर उसी घरमें रहने लगी॥

यह खबर तो लड़कोंके द्वारा क...लालके दोस्तोंको मालूम होगई। कि क...लाल एक स्त्री लाये हैं अब इनके दुश्मनभी इनके दोस्त होगये और इनके घर आने जाने लगे। यह कब सम्भव कि, यह मुझको रात दिन साथ लिये फिरें

यह कभी २ नौकरीके लिये बाहर जानेलगे और मुझको घरमें अकेला रहना पड़ता था॥ इनके दोस्त लोग बराबर आतेथे और मुझसे बात चीत करतेथे कि, यदि आपको कोई तकलीफ हो तो आप कहिये मैं दूर कर दूंगा॥ ऐसे अकेले रहनेके समय जब हमारे निकट पुरुष आतेथे तो कौन विश्वास करेगा कि, मैं बचीहूंगी बचूं या न बचूं॥ इस रीतिसे मेरा कुछ समय सुखपूर्वक कटा लेकिन् जब क... लालको कुछ नहीं मिलताथा कि,जिससे मेरी खातिर करें तो बिचारे को मेरे अभागीके लिये अपने घरकी वस्तुओंका भी बेंचना पड़ा और थोड़े दिनके बाद यह हाल होगयाकि क... लालके भाईबंधु इनको कुछ नदेते और अगर इनको कुछ नहीं मिलताथा तो मुझको खिलाकर खाते थे और यदि कुछ भीनहीं मिला तो फाका पड़ताथा अतएव मैं भी अबकुछ

काम करके क ... लालको खिलाने लगी ज
क... लाल बीमारपड़े और धीरे २ इस अवस्थाके
पहुँचे कि, चारपाईसे उठना कठिन होगया ॥
मैं स्त्री होकर क्याकरूं और कहां जाऊं खा
का तो कुछ ठेकाना नहीं दवाकहां से करूं क.
लालके संबंधी अथवा जो मेरेआनेके बेलामें दार
बनेथे सो दरवाजे पर झांकने नहीं आवें मुझीक
भीतर बाहरका काम करना पड़ताथा पैखान
पेशाब सब मुझीको फेंकना पड़ताथा क्या क
किसको बोलाऊं दोचार महीना ऐसेही दि
काटे और जब मुझको यह मालूम हुआ कि
क... लाल नहीं बचेंगे तो मैंने इस बातकी
कोशिश की कि इनके पास जोकुछ जमी
अथवा खेत और बागहो सो यह मेरे नाम
लिखदें लेकिन् सब बेहासिलथा क्योंकि, इन्हों
कुछ नही कहा और नहीं कहनेका यह कारण

कि इनके ख्यालमें यह आया कि; यदि मेरे मरने पर मेरी जमीनको यह दूसरे को न देवे इनके मरनेके उपरांत उनको कोईनहीं पूँछनेकोथा और मुझको आप जीना कठिन होगया मैं किसी प्रकारसे दर्जी का काम करके अपना सीना प्रगट किया तो कुछ दिनों तक काम चला॥

एक-ऐसा संयोग आपड़ा कि,एक मनुष्यसे मैंने यह बात कही कि, मैं कहीं जाने पर तत्पर हूं लेकिन् मुझको खाना मिलना चाहिये इस मनुष्यने कहाकि मैं अब तुम्हारी सादी करादूंगा और तुम्हारीही जातिसे यदि तुम मेरे घर चलो मैं तो धन्य भाग्य समझी कि,कहीं गुजारा होनाचाहिये मैं उसके घर चली गई और उनके यहांके बनाये खाना मैं खाने लगी जिसके पास मैं गईथी वह मेरेही जातथी और कुछ दिन ठहर कर मेरी सादीके लिये ब्राह्मण भेजा गया कि, बरको खोज

करै निदान एक बर खोजा गया और सब रसमें बहुत खुशी और कामिलसे अदाय होनेके बाद सब लोगोंकी यह रायठहरी कि, उनकी बिदाई सादी में करदेनी चाहिये और मैं अब ससुरारमें गई वहां जाने पर मुझको सब कोई कुवांरी कन्या जानताथा और मुझको अति सुन्दर देखकर सब प्रसन्नथीं और मैं भी बहुत चतुरतासे अपने को छिपाये रही लेकिन् थोडे दिनोंके बाद लोगों ने मेरे छोटे उमरकी लड़की होने पर सक किया और बहुत आँखोंसे पहँचान कर लिया और कहने लगीं कि,यह तो बुढ़ियाहै गुप्तरीतिसे दरियाफ्त करने लगीं अंतमें मुझको क...लालकी रखेलिन कहकर निकालदिया मुझको सही मालूम हुआ कि कहीं जायें लेकिन् विपत्तिसे नहीं बचूंगी मैंतो बड़े घरकी लड़की हूं पर कर्म मेरा छोटाहै अब यही मालूम होताहैकि,अवश्य दुःख सहनापड़ेगा

मैं फिर उसी घरमें आकर रहने लगी जिसमें मुझ को क...लालने रक्खाथा यहां पर जब मैं आई तो बहुतसी औरतें जमा होतीथीं पूछनेलगीं कि, अब तक तुम कहां गईथी और क्यों लौट आई मैंने अपना सब वृत्तान्त कह सुनाया और रोने लगी तो सब औरतैं मेरे दुःखसे दुःखित होकर मुझको समझाने लगीं कि,क्यों रोतीहो भाग्यमें जो लिखा रहताहै सोही होता है अब तुम क्यों नहीं फिर अपने घर जाती मैं अपने कियेपर बहुत पछतातीहूं और फिर सोचती हूं कि, मैं अपने घर जाऊं कि, न जाऊं मुझको अपने स्वामीजीका कि जिनके साथ मेरी सादी हुई थी पता याद था अतएव मैंने एक पत्र उनके पास लिखा यह पूछनेके लिये कि,आप मुझको किसी प्रकारसे रख सकतेहैं कि,नहीं मुझको तो यह निश्चय मालूम था कि, पहिलेकी तरह अपनी

पत्नीकी नाईं तो अब मुझे रख नहीं सकते क्यों-
कि मुझको घर छोड़े चार वर्ष होगयाहै और यह
बात तमाम फैल गई कि, फलानेकी लड़की
निकलगई है तो मुझको फिर कैसे रख सकतेहैं पत्र
यही था॥(छन्द)ममप्राण प्यारे लिखत लज्जा लगत
धिक मम जीधको ॥ हाय केहि विधि त्याग भाग्यो
अहम अपने पीवको ॥ देत पीरा करानि मेरो फल
कियेका मिल गयो । वश नाहिं प्यारे करु क्षमा
अब शरण तेरी हम गह्यो ॥लाज लागत लिखत
तुमको ना लिखे तो नाबने॥ देहु दासी कहँ शरण
अब दयाकरिकरुणात्मने ॥

हे प्यारे ! अब मुझको अपना कोई नहीं देख
पड़ता इसलिये मैं विनय करतीहूं कि, यदि आप
मुझको दूसरे तौरसे नहीं रख सकते तो दासीके
बहाने मुझको रखिये कि, मेरी परवरिश हो इस
पत्रको भेजने पर कुछ उत्तर नहीं आया इससे

मुझको मालूम हुआ कि, खत न पहुँचा होगा अथवा मेरे स्वामीकी ख्वाहिस मेरे बुलानेकी नहीं इसलिये मैंने यह ठीक कर लिया कि, अब मुझको जन्मभर दुःख सहना लिखाहै क्योंकि, अब मुझको कोई सहारा जीनेका नरहा मैं बराबर अब दुःखमें रहती हूं और यही चाहती हूं कि, कोई मुझको चाकरिनके तौर पर रखले लेकिन् जिस स्थान में मैं हूं उस स्थानमें मुझको बदनामीके डरसे कोई नहीं रखता पर अगर कोई मुझको दूसरी जगह रखले तो मैं चलने पर तैयार हूं ॥

कोई मुझको सहारा जीनेका नहींहै परन्तु ईश्वर का हाथ बहुत बड़ाहै । एक दिनका यह हालहै कि एक सज्जन पुरुष जोकि बड़े धनवानहैं और उनका बहुत भारी मकान हमारे मकानके सामने है एक दिन अकेले कोठेपर टहल रहेथे जब मैं अपने घरमें बैठीथी अकस्मात् मेरी नजर उनपर

जापड़ी मैंने अपने दिलमें सोचा कि इनसे अपने प्रारब्धकी परीक्षालूं यह मेरी तरफ ध्यान देंगे कि नहीं क्योंकि,बिगड़े हुये समयमें अपना भी पराया होजाताहै और बुलानेसे मृत्युभी नहीं आती सुतरां मैं देखतीथी कि,मेरी ओर जब देखें तो मैं हाथ जोड़कर कुछ विनतीका इशारा करूं । ईश्वरकी कृपा हुई कि, उन्होंने मेरी ओर देखा मैंने हाथ जोड़ पृथ्वी पर गिर दंडवत् की । भगवान् की कृपासे उनके मनमें कुछ दया मालूम हुई और मेरी तरफ एक कागज उठाकर इशारेसे बतलाया कि लिखकर अपना हाल भेजो मैं बहुत आनन्द हुई और एक कागज पर अपना हाल विस्तार पूर्वक लिखा और अपने मनमें यह सोच करके कि, यदि मैं इस पत्रको किसी दूसरे मनुष्य के द्वारा भेजूं तो कोई दूसरा न देखलेवे तो विचारे हमारी भलाई करने परहैं उनका भी नाम नि

कासा होय, डाकके द्वारा उस पत्रको भेजवा दि-या । जब मेरा पत्र उनके पास पहुँचा उन्होंने भी उसका जवाब लिखा कि, मुझसे क्या चाहती हो और मुझको क्या कहती हो । यह जवाब मुझको एक बालिकासे मिला जिसने यह बातकही कि अबसे जो कुछ लिखना पढ़ना होय मेरे द्वारा भेजना और डाक पर मत भेजना ॥

मैंने फिर अपना हाल लिखा कि, मैं आपके द्वारा अपना निर्वाह चाहतीहूं और जो कुछ आप आज्ञा दीजियेगा मैं उसको करने पर तत्परहूं इसका जवाब फिर मुझको (२) रुपयेके साथ आया कि अच्छा मैं तुमको खाने पीने का क्लेश नहींहोने दूंगा और आज यह दो रुपया भेजताहूं इससे अपना काम काज करना एवं प्रकार ईश्वरकी कृपासे मैं अब कुछ क्लेश रहित हुई लेकिन् इस रीतसे रहतीथी कि, किसी आदमी पर यह बात न

मालूम होय कि इसको अब रुपये पैसेकी आमदहै कभी कभी मैं जब अपना हाल आदिसे अन्त तक याद करती थी तो फूटफूटकर रोतीथी कि, मैंने क्यों अपने घरको त्याग दिया और जिस हालमें मुझ को ईश्वरने रख दियाथा उसमें असंतुष्ट होकर इस हालको पहुँची कि, रात दिनबे हाल रहतीहूं सचहै कि जब तक आदमी किसी वस्तुको खोता नहीं तब तक उसको उस वस्तुका गुण नहीं मालूम होता । ईश्वर तो जो कुछ करताहै सो अच्छाही करताहै परन्तु हम लोग नहीं समझनेके कारण उसको बुरा समझतेहैं हम लोगोंको सर्वदा ईश्वर का धन्यवाद देते रहना चाहिये कि ईश्वर तुम हम पर बहुत कृपा रखतेहो हमको बहुत सुखहै मनु-स्मृतिमें भी लिखाहै कि, क्लेश होने पर अपने भाग्यकी निन्दा कभी नहीं करनी चाहिये ॥

हम लोगोंको चाहिये कि, दूसरे आदमीका

दुःख जो हमसे अधिक दुःखी हैं देख कर अपने हाल पर आनन्द रहैं ईश्वरकी कृपासे उस दुःखी पुरुषके समान मेरा हाल नहीं हुआ एवं प्रकार अपने हालपर आनन्द होकर उस पुरुष पर दयाके नयनसे देखे अथवा दया करे॥

ऐसा विचार करके मैं ईश्वरको कोटि धन्यवाद देने लगी कि, हे ईश्वर! जिसगतिसे चाहो रक्खो लेकिन् जो होनाथा सो तो होगया अब मैं किस प्रकारसे रहूं सिवाय इसके कि, अपनीही मेहनतकी रोटी खाऊं॥

पत्र तो अब बराबर उसी बालिकाके हाथ आया करताथा लेकिन एक दिन जबकि, वह बालिका मेरा पत्र लिये जातीथी उसको एक पुरुषने जोकि, हमारे प्रतिपालकके चचा थे बुलाया बालिका बहुत चतुरथी उसके ध्यानमें यह बात आई कि, यदि मैं इस पत्रको लेते जाऊं

तो यह अवश्य देखेंगे और यदि मांग बैठें तो दे-
नाही पड़ेगा और यदि दिया तौ मुझको तो कोई
कुछ नहीं कहेगा क्योंकि, मैं अभी छोटी लड़की
हूं कहदूंगी कि, भाई मैं क्या जानूं मुझको दे-
नेको उस औरतने कहा है मैं देने जाती हूं मैं
क्या जानूं क्या लिखा है और इसके देनेसे हानि
है अथवा लाभ परन्तु उस पुरुषकी जिसको मैं
इस पत्रको देने जाती हूं अच्छी भाँति नेकनामी
होगी और इसका कारण मैंही हूंगी ऐसे सोच
विचार उस बालिकाने यह चतुराईकी कि, एक
लड़का जोकि भीतर जाताथा उसको पत्र देकर
कहाकि, उनको देदेना । यह कह वह तो
सुनने गई परन्तु उस लड़केने वह पत्र उस पुरु-
षके बापको देदिया ।

जो लोग बुद्धिमान् होते हैं वे लोग किसीके अव-
गुण देख कर प्रगट नहीं करते बल्कि उसको छिपा

देतेहैं।उनके बापने उस पत्रको पढ़कर फाड़ दिया लेकिन् पता लगाने लगे कि, यह कौन स्त्री है जिसने यह पत्र लिखा है। जब उनको यह पता लगाकि, इस छोकड़ेको एक बालिकाने यह पत्र दिया था तो उस बालिकाका पता लेने लगेकि, कौन है और कहांसे पत्र लाई थी ॥

यह सब पता लगाना ऐसाथा कि, किसीको कुछ नहीं मालूम होताथा कि, रक्षपालीके हाल जाहिर जाननेके लिये किसीने कमर बांधाहै।बुढ़-ऊने उस बालिकासे पूछा कि,तू कै प्रकारका काम करतीहै चौका, वर्तन, नहवाना, तमाखू चढ़ानी कागज पत्र उठाना धरना सब काम हमको गिना वो तो सही। बालिका तो चतुरथी बात बनाकर कहने लगी--जब बुढ़ऊको कुछ पता न मिला तो फिर हँसकर पूछा कि, बतावो यदि तुम पढ़ी रहती तो क्या करती। बालिकाने उत्तर दिया कि इससे

भी बढ़कर चतुराईसे बात करती । इसके कहनेसे बुढ़वाको इस बालिकासे कोई गुप्त बातका प्रगट होना संभव नहीं मालूम हुआ इससे अब आशा तजनी पड़ी ॥

अब कभी कभी ताकमें बठौ करे कि, देखों यह कहांजातीहै वह कौनसा कार्य्य है जिसके करने पर तत्पर होकर पुरुष कमर कसे और वह कार्य्य न होय । अन्तमें उनको मालूम होगया कि, जो सामनेका घरहै उसीमें केदारलालकी रखेलिन रहतीहै और उसीका यह पत्र है एक दिन बहुत एकांतमें उस स्त्रीको याने रक्षपालीको बुलवाकर पूछा कि, हमारे बेटाने तो हमसे भी कहा है कि, रक्षपाली बडे घरकी लड़कीहै लेकिन् इस समय विपत्तिमें पड गईहै उसका प्रतिपालन करनेमें कोई बदनामी नहीं है और हमने भी उससे कह दियाहै, कि अच्छाहोगा लेकिन तुम कहो तुम

को कोई प्रकारका क्लेश तो नहीं है और तुमको अभीतक कितना रुपया मिलाहै।रक्षपाली समझी कि, यह बात सच है कह दिया कि, अभीतक तो आठ रुपया मिलाहै बुढ़वाने अपने बेटेसे तो कुछ नहीं कहा लेकिन् अपने हवेलीमें कह दिया कि,अपने लड़केको जरा समझादो कि सोच विचार कर खर्च किया करे और ऐसा न करे कि, मुझे बदनामीकी टोकरी शिरपर ढोना हो॥

जब कि, मेरे याने रक्षपालीके रक्षपालको मालूम हुआ कि,मेरे पितापर यह बात प्रगट होगई है तो रक्षपाल करना एकदम छोड़ दिया॥ मुझको आठ रुपया मिल गया था बहुत बचा-कर खर्चतीथी तीनमहीनेतक तो अच्छीतौरसे कटे उसके बाद वही विपत्तिने अपना मुँह दिखलाया जिसने इसको विपत्ति होनेके समय घेरा था॥

अब मैं बहुत घबड़ा गई और चली कि जाकर

गंगाजीमें डूब मरूं जाते जाते जब थोड़ी दूर गई तो देखा कि,एक साधू एक वृक्षके ओटमें बैठा है धूनीरमी है और साधू बाबाको बहुत लोग घेरेबैठे हैं। मैंने अपने मनमें सोचा: कि,मैंभी इनकीचेली होजाऊं लेकिन् (दोहा) कर्म कमंडलु कर लिये तुलसी जहँ जहँ जाय॥ सरिता सागर कूप जल, बूँद न अधिक समाय॥

मैं अलग बैठी रही कि,जब सब लोग इस स्थानसे चले जाँय तो मैं भी साधूबाबाका दर्शन करूं और अपना दुःख गाऊं यदि इनसे कोई जीनेकी राह निकल आवे तो उत्तम है॥

सब लोगोंके हट जानेपर मैंने उनके पासजाकर, प्रणाम किया और बैठगई साधू बाबाके चेहरासे यह मालूम होता था कि,इनको हमारे आने पर बहुत आश्चर्य हुआ!साधू बाबाने मुझसे पूछा कि, तुम कौनहो और इहां क्योंकर आई? मैंने अपना

सब हाल कह सुनाया और कहा कि, मैं इसलिये आईहूं कि, मेरेलिये कोई उत्तम उपाय बता दीजिये जिससे कि, मेरा अब गुजर होजाय ॥

साधू बाबा फिर मुझको समझाने लगे कि, स्त्री जाति अत्यन्त बुद्धिहीन होती हैं और इनपर विश्वास करना उचित नहीं शहरयार इसी लिये प्रतिदिन एक स्त्रीको मार डालताथा। मैंने पूछाकि, महाराज वह शहरयार कौन था और प्रतिदिन स्त्रियोंको क्यों मार डालताथा ॥

साधूबाबा कहने लगे कि, यह एक सहस्त्ररजनी चरित्रकी कथा है कि, दो भाईथे एकका नामशहरयार और दूसरेका नाम शहरजमांथा। जब इनका बाप मरगया तो इन दोनों भाइयोंने अपना २ व्यवहार अलग २ करना आरंभ किया। इस भांति जब कुछ दिन बीते तो शहरयारने शहरजमां के पास आदमी भेजाकि, बहुत दिन हुये हमने तुमको देखा नहीं सो कृपाकरके भेंट कर जाव ॥

शहरजमां बहुत तयारीके साथ अपनी प्यारी स्त्रीसे भेटकरके भाईसे भेटकरनेचला रास्ता कई एक दिनकाथा शाम होनेपर एकस्थानमें खेमा पड़ा जब रात्रि हुई तो शहरजमां स्त्रीसे दूर होनेका वियोग नहीं सह सका । जब आधीरात हुई तो अपने खेमें मेंसे अकेले निकल घरकी राह ली जब घरमें पहुँचा तो देखाकि, उसकी स्त्री एक कालेकलौटेके साथ सोरही है। शहरजमांको बहुत ग्लानि हुई कि, हम इतने सुन्दर और राजाहैं लेकिन मेरी स्त्री पतिव्रता क्यों न होगी कि, इस कुरूप पुरुषके साथ भोग करती है । शहरजमांने अपनी तलवार निकाल कर ऐसा छेव माराकि,दोनोंप्राणी मरगये । फिर शहरजमां उलटेपांव जाके अपने खीमेंमें सोरहा । फिर प्रातःकाल होनेपर अपने सफरका रास्ता लिया जाते जाते अपने भाईके निकट पहुँचा । इसका भाई बहुत तयारीके साथ

इससे मिला लेकिन् शहरयार शहरजमांको बहुत उदास देखता था। जिसका कारण शहरजमां नहीं बतलाता था। एक दिन शहरयार शिकारके लिये चला और अपने भाईसे कहाकि, तुमभी चलो लेकिन् यह नहीं गया॥

जब शहरयार चलागया तो इसकी स्त्री और ग्यारह स्त्रियां महलसे निकल प्रतिदिन फुलवाडीमें आतीथीं इसमें छः स्त्री जो कि, सत्यमें पुरुषथे अपना मरदाना वेष छिपा दूसरी छः स्त्रियोंका हाथ पकड़ लेतीथीं और भोग विलास किया करती थीं॥

इस बातको जब शहरजमांने देखा तो अपने दिलमें कहा कि,मैंने अपनी स्त्रीको व्यर्थ मार दिया क्योंकि, यही हाल हम सब स्त्रियोंका देखते हैं यह सोचकर अपने दिलसे रंजको दूर करादिया॥

जब शहरयार शिकारसे आया तो अपने भाई-

को हर्षित देखा और कारण पूंछने पर सब हाल कह दिया । शहरयारने कहा कि,हमको दिखादो । शहरजमां ने दिखादिया ॥

शहरयारने भी स्त्री जातपर विश्वास न करके अपनी स्त्रीको मारडाला और उसी दिनसे यह नियम किया कि,प्रति दिन एक सुन्दरीसे भोगकरे और सुबह होते उसको फांसी दिलादे ॥

फिर साधू मुझको समझाने लगे कि, तुमने यह सब क्यों किया घरका थोड़ा क्लेश छोड़कर बड़े घरकी कुतिया बनीहो । हमतो बहुत देर तक बैठने नहीं देंगे क्योंकि,हमको भी लोग खराब समझेंगे और लिखाभी है कि दूसरेकी स्त्रीके साथ अकेलेमें बात न करे । हमतो यही करतेहैं पतिव्रता स्त्रियोंका कहना देवता लोगभी मानतेहैं और पतिव्रतास्त्रीको कोई क्लेश नहींहोता । अबतुम को हम क्या कहें दिल साफ करके हरि भजन कर

मैंने कहाकि, महाराज! पतिव्रताका क्याधर्म्म है। उनके निकट एक पुस्तकथी जिसका नाम भविष्यपुराणहै उसको खोलकर कहा कि, सुनो

पूर्वार्द्ध नवांअध्याय।

पतिव्रताका आचरण।

ब्रह्माजी कहतेहैं कि, हे मुनीश्वरो! सबआराध्य अर्थात् आराधन करने योग्य पुरुषोंको आराधनकी यह विधिहै कि, उनकी चित्तवृत्तिको भली भांति जानकर उसके अनुकूल चलना और सदा उनका हित चाहना भर्ताके चित्तके अनुकूल चलना यह पतिव्रताका मुख्य कार्य है। पतिके माता पिता ज्येष्ठ भ्राता पितृव्य गुरु मामा बहनोई आदिका बड़ा आदर रक्खे और जो अपनेसे सम्बन्ध में छोटे होय उनको आज्ञा दिया करै पतिके मित्र और देवर आदिसे भी हास्य न करै किसी पुरुष

के समीप एकान्तमें बैठना और हास्यकी बा
करना ये पतिव्रत धर्मके नाशके हेतुहैं इसकार
उत्तम स्त्री इनको कभी न करै दुष्टोंका संग स्वत
न्त्रता बहुत हँसी करना अपने हाथसे किसीपुरु
षको वस्तु देना अथवा लेना घरके द्वारपर ठहरन
राजमार्गका देखना बहुत पुरुषोंके आगे निकलन
ऊंचे स्वरसे बोलना और हँसना दृष्टिसे वचनसे
और शरीरसे चंचलता करना दुष्ट स्त्रियोंको सं
करना इत्यादि औरभी बुरीबातें पतिव्रता स्त्री
न करै जोकोई पुरुष अपनेको कुदृष्टिसे देखे उस
को आप पिता अथवा भाईके समान माने इस
रीतिसे स्त्री का स्त्रीत्व नहीं बिगड़ताहै और कुल
की निन्दाभी नहीं होतीहै ॥

मैंनेकहाकि,महाराज मैं बड़ी अभागीहूं कि घ
के सुखको त्याग वन वन फिरतीहूं और सब क्लेश
को सहना पड़ताहै इतनेमें उनके निकट दो ती

आदमी आने लगे तो बाबाजीने हमको दूरदूर किया कि, अब तुम इस स्थानसे जाव। मैं ऐसी लज्जामें पड़ी कि, अब न मरते बने न जीते मैं सोची कि, अब हमारा बड़ा जातका होना और सुन्दरी होना कोई काम न आया अब सिवाय इस उपायके कि डूब मरूं दूसरा उपाय क्लेशसे बचनेका नहीं है इससे मैं डूब मरी॥

व्यभिचारात्सदैव स्त्री लोके प्राप्नोति निन्द्यताम्
शृगालयोनिं सा याति अतिक्लेशेन पीड्यते॥

इति

श्रीः ।

अथ प्रेमनदीप्रारम्भः ।

दोहा ।

अतिसुखप्रदरातिपतिप्रभुहि, पुनिपुनिशीशनवाइ ।
प्रेमनदी वर्णन करौं, प्रेमी जहाँ नहाइ ॥ १ ॥
नेम नहीं इस प्रेममें, नहीं जाति नाहिं पाँति ॥
बे सुधि है तहँही लगत, लोह कांतकी भाँति॥२॥
नहीं नेहका गेह कहुँ, नहीं वेश नाहिं देश ॥
नहीं गुरू नाहिं शिष्यहै, किय अनुभव रमणेश ३॥
लगे नेह जिमि जगतमें, मिलत पुरुष अरु नारि॥
तैसे जो हरिसे लगै, हरिहु मिलै हितकारि ॥४॥

यहाँ एक इतिहास लिखते हैं कि, एक कोई आदमी एक साधूके पास जाके बोला कि, बाबाजी हमको चेला करिकै वैरागी करो, तब वह साधू बोला कि, तेरेसे वैराग्य न होयगा तेरा मन

संसारमें है. तब उसने कहा कि,बाबाजी मेरा मन कहीं और किसीमें नहीं लगताहै, तब बाबाजी बोले कि जिसका मन कहीं नहीं लगता उसको परमात्मामें भी नहीं लगनेका; इसवास्ते तू जाके किसीमें मन लगाके फिर आ ।

तब वह वहांसे मन लगानेको चला और फिरते फिरते उज्जैनमें आया. तहां एक साहूकारकी लड़की अपने महलकी बारीमें किनारीदार श्याम रंगकी सारी ओढ़के खड़ीथी,जिसको देखतेही इस का मन उसमें लगगया.तब वह बेसुधि होके खान पान छोड़ वहाँही खड़ा रहने लगा; किसी २ ने उससे पूँछा कि,क्यों खडे हो ? वह बोला कि, इस घरमें हमारी प्राणप्यारीहै; उसकी इंतजारीमें खड़े रहते हैं यहबात साहूकारने सुनके निश्चय किया कि, यह मेरी बेटीपर आशिकहै,इसको कोई तर-हसे टरकाना चाहिये, तब बुलायके बोला कि

तुम तोले तोले भरके एक हजार मोती लायके
देओ; तब हम इस लड़कीको तुमको विवाह दें
यह सुनके उसी साधूके पास जायके वृत्तान्त
कहा तब उस साधूने अपने योगबलसे उसके
मोती मँगाय दिये. जब उसने उस साहूकारके पास
जाके मोतीदिये, तब साहूकारने मोती देखके जाना
कि, लड़की दिये विना मोती नमिलैंगे और लड़की
बेजातिको देनेमें बदनामी है; इसवास्ते इसको
मरवायके मोती लेऊंगा. तब चांडालोंको एकांतमें
बोलाइके कहा कि, तुम इसको जंगलमें लेजाके
मारडालो और इनसे कहाकि, इन सिपाहियोंके संग
जाके हमारी कुलदेवी जो इहांसे कछु दूरहै, उसका
पूजन करिआवो, फिर तुम्हारी शादी करदें
वह सुनतेही गया, तब चांडालोंने उसको जंगलमें
मारके विचार किया कि इसका मांस भी बेचि
लेवैं; तब उसका चमड़ा वगैरह तौ वहांहीगाड़

और मांस मृगका कहके बकरकसायकेहाथ बेंचा जब एक आदमीने आके पांचसेर मांस मांगा तब वह तौलने लगा तौ पंसेरीमें पाव सेर भी न चढ़ा उसने देखके कहाकि यह मांसहै, या सीसाहै; तब मांस मेंसे आवाज निकली, आशिकका मांस ऐसा ही होता है. ऐसे देखके उन दोनोंने उन चांडालों को पकड़के राजा विक्रमादित्यसे कहा कि इनने मांस बेचा सो बोलताहै तब राजाके पूछनेसे चांडा-लोंने यथार्थ कहा यह सुनके राजा उसके सबअंग मँगवाके वैतालसे जीवित करवाया और वह लड़की हाजिरकी;तब वह अपना वृत्तान्त कहके लड़की को छोड़के गुरुके पास गया; जब गुरुने उपदेश किया कि जैसे तेरा मन उस लड़कीमें था वैसाही ईश्वरसें लगा तौ ईश्वर मिलैंगे यह सुनके उसने उसी प्रकारसे ईश्वरमें चित्त लगाके ईश्वर को प्राप्त भया ॥

बेगमकी कहानी ।

जिसमें आजमबेगका प्राणदेना और प्यारीकी गली
में उसकी रथी भारी होजाना और इस अद्भुत
चरित्रके पीछे उस प्यारीको अपने तईं
मारडालना और उसकी रथीके साथ आ-
जमबेगकीरथीकाहलकाहोना वर्णनहै.

अगले समयमें नेहके ठगनेको कैसे २ परम-
स्वरूप तरुण मनुष्यको दुःखकी तलवारने मार-
डालाहै कि सब छोटे बड़े उस्से हार मान रक्षाकी
आकांक्षा करतेहैं इन दिनों एकसीधी सच्ची लखन-
ऊकी रहनेवाली बुढियाने यह कहानी यों कहीकि
एक मेरी हमजोली मुँह बोली बहिन अतिसुंदर
परममनोहर बेगम नाम मुझसे हित प्रीति और
प्यार रखतीथी और मैं बहुधा कहा करतीथी कि
बहिना यह प्यार प्रीति व्याह होनेपर छोड़ न देना
निदान वह सुंदर सुकुमारी संगीन महल महल्लेमें

एक बड़े धनवान मुगलके साथ व्याही गई और बड़े आनंद सुख चैनसे अपने घरमें रहने लगी. इसबीच मेरे घर रतिजगेकी राति आपड़ी; उसमें सब टोला परोसन नाते घरानेकी सुन्दर२ सुकुमारी मनोहर मुग्धा नवोढा मेरे यहां आई और वह चंद्रमुखी बड़े साज शृंगारसे बनठनके आई. जिस समयमें मेंहँदी लगे हुए हाथसे पालकी का परदा उठा घरमें गई उस समय छैला छबीला रसीला अलबेला परमसुहावनी उठती जवानी मिरजा आजमबेग वहां खड़ाथा उसकी आंख सहसा उस सुकुमारी पर पड़गई देखतेही जलहीन मीनके समान तड़फके चित्रलिखासा बेसुध होगया दोघडी पीछे कुछ चैतन्य हुआ इतनेमें सांझहुई और सब सुकुमारी रतिजगेके मकानमें हर्ष आनंद सभा जमाने लगीं मेरीनंदसे आजमबेगकी पहिचान थी, उसकेहाथ

आजमबेगने कभी फूलोंके हार और गहने, कभी मिठाईके दोने, कभी भाँति २ की अच्छी२ चीजें इस मनोर्थसे अन्दर भेजता कि,मेरे हाथकी चीजें उसके काम आवें और मेरे ऊपर उसके मनमें पीर प्यार उपजै और कभी यह सोचकेघबाराता कि रात बीते सब कान्ता अपने अपने घर जावैंगी हाय! मैं दुःखकामारा क्या करूंगा बे मौत आये मररहूंगा इसी व्याकुलतामें रात बीत गई और स-बेरा हुआ सब सुंदरी अपने २ घरको बिदा हुई जब उस सुकुमारीकी पालकी जिससे उसकीलगन लगीथी उसके पास आई तब उसको यह दशा हुईकि, मानो बारूदकी ढेरीमें आग लगादी जब वह पालकी उसके आंखकी ओट हुई तब उसके रोने कराहने ने मेघकी गर्जनको मात कर दिया बुढ़िया बोली कि,जब आजमबेगको रोते कराहते अत्यंत व्याकुलतामें इस भांति एक वर्ष बीतगया

कि,कुछदिन अपने मित्रोंके पास विरहके दुःखकी कहानियाँ कहते सुन्ते और उस बहानेसे मनकी पीर प्रगट करते काटता और रातको कभी तौ प्यारीके वियोगसागरमें घबरा २ डूबता उछलता और कभी इस अभिलाषमें बड़े आनंदसे प्रसन्न होता कि, जब मेरी प्यारीसे मिलाप होगा तब बडे आनंदसे परस्पर प्यार प्रीतिकी बातें करके उसके हाव भाव कटाक्षको देख बड़े आनन्दमें मग्न हूंगा. मेरी नंदने यह दशा देख उस सुन्दरी कान्तासे बड़ी चतुराई युक्ति बनाके कहाकि अरी प्यारी!परम धर्मात्मा पतिव्रता जब तू उस रतिजगेमें मेरी भावजके घर गईथी तब डोलीसे उतरते तुझे एक छबीले रसीले उठती जवानी आजमबेगनामीने देख लियाथा, उस समयसे विरहके मारे उस अभागीको तुझमें लव लगाये रातदिन रोते कराहते बीतताहै न खानेको

मन न पानी पीनेको केवल तेरे मिलापके अभि-
लाषसे जीताहै; वह गर्वीली छबीली सुन्दरी इस-
बातको अनसुनीकर टालगई और दूसरी बातें
करने लगी. फिर कभी न पूछाकि उस विरहके
मारे अभागीकी क्या दशा है जब दूसरा वर्षभी
आजमबेगको वैसेही बीता तब तो उसकी प्रीति
उस सुन्दरीके मनपरभी व्यापगई और एकान्तमें
बैठ उस्के दुःखकी दशा पूछके आँखोंमें आंसूभर
अति व्याकुल हो कहने लगी कि, क्या करना
चाहिये लोकलाजकी व्यथा मारे डालती है कोई
उपाय मिलनेका नहीं देख पड़ता एक युक्ति है कि,
मेरे घर कुछ काम होनेवाला है सब नाते कुन्बेकी
स्त्रियाँ आवैंगी उस दिन उसको जनानी पोशाक
पिन्हाके ले आना तौ साथ बैठके हम दोनों
जी बहला लेवैंगे जब वह दिन आया तब केसरि-
या जोडा बहुत सुथरा गोटे पट्ठेसे चमचमाता

और जड़ाऊ गहना भेज दिया मेरी नंदने वह जोड़ा गहना आजमबेगको पहिना दुलहिन बना बहुत अच्छी झमझमाती पालकीमें सवार करा उस चंद्रमुखीके घर भेजा.सुन्दरीने स्त्री वेष बनाये हुए आजमबेगको एक अलग मकानमें उतारा जिस्में कोई चरचा नजाय.आजमबेग वहां अकेला बैठा दूरसे टकटकी लगाये देखताथा परन्तु मुँहसे कुछ न बोलता, उस्की यह दशा देख सबस्त्रियां आपसमें कहतीं कि क्या कारणहै जो यह सुन्दरी हम सबसे अलग बैठीहै न हमारे पास आतीहै न हमें अपने पास बुलातीहै एकने कहाकि अपनीसुंदरता के अभिमानसे,दूसरी बोली कि गहनेके गुमानसे तीसरी कहने लगी कि अपने बड़े घराने के गरूरसे हमको ओछा समझ हमसे मेल मिलाप नहीं चाहती यह सुन घरकी मालिकिन बोली कि यह कोई बात नहीं इसे कुछ चित्तभ्रमहै इसलिये

मैंने अलग बैठाला ऐसा न हो कि उसके मुँहसे कोई ऐसी अनुचित बात निकल जाय कि तुम्हारा सबका मन अप्रसन्नहो जो कहो तो मैं उसके साथ एक बाजी चौपड़की खेल:उसका जी बहला आऊँ सबने कहा कि बहुत अच्छा जो अपने घर आवै जिस रीतिसे वह प्रसन्नहो उसी रीतिसे उस का आदर सन्मान करना चाहिये यह सुन वह उसके पास जा चौपड़ खेलने लगी, जब खेलते २ रात बीतगई और प्रातःकाल होने लगा तब वह चन्द्रमुखी बोली कि जीतौ नहीं चाहताहै कि तुझे बिदाकरूं पर लाज बैरिन् यह विरहका दुःख देतीहै जो उजियाला होजायगा तौ ऐसा नहो कि तुम्हारी चालढालसे लोग लख लेवें;तौ हमारी तुम्हारी दोनोंकी बदनामी हो ऐसे ही कभी कभी मिलाप होजाया करैगा निदान ऐसे समझा बुझा मिलापकी आशाका धैर्यदे विदाकर

पीछेसे सबको बिदा किया और आप मनमें प्रीतिकी अग्निज्वालासे जलने लगी और आजम-बेगभी जो अपने घर पहुँचा तौ उसकी यह दशा हुई कि खाना पीना छोड़ ठंढी उसासें ले २ रोने कराहने लगा निदान कुछ दिनमें बीमार पडके मरगया. जब उसकी रथीको लोग रोते पीटते ले चले और उसी मुहल्लेमें उस प्यारीके महलके नीचे पहुँचे तो वह रथी ऐसी भारी होगई कि उसका बोझ लोग सँभाल न सके लाचार हो धर-तीपर धरदी और बहुतसे बली लोग अपनासा बल करते उठाते पर वह न उठती. यह चरित्र देख मनुष्योंकी बड़ी भीड़ होगई और सारे मुह-ल्लेकी स्त्रियां अपने २ कोठोंकी छतपर आके देखने लगीं और सब स्त्री पुरुष रथीके भारी होनेसे बड़े अचंभेमेंथे, जब यह वृत्तान्त उसने सुना जिसकी चाहमें उसके प्राण गयेथे तब वह उजले

कपड़े पहिन शृंगार कर सुगंध लगा छुरी हाथमें ले मकानकी छतपर अपने प्यारेको मरा देख मनमें कहने लगी कि इस विचारेने मेरी चाह में अपने प्राण खोदिये मुझे धिक्कार है जो मैं जीती रहूं और यह विचार अपने कलेजेमें छुरी मार मरगई और रुधिरकी धारा ऐसी बही कि आजमबेगकी रथीके नीचे पहुँची उस समय उस कान्ताके घरके लोगोंसे इसके सिवाय और कुछ न बन पड़ा कि रथी बना उसपर उसे रख गाडनेके लिये ले निकले,उसके निकलतेही आज-मबेगकी रथी भी हलकी होगई और आपही आप चलने लगी तब उसको लोगोंने उठा लिया जाके एकही तकियेमें पास२दोनोंको गाड़ दिया.यह अ-द्भुत चरित्र देख सब लोग कहने लगे कि ऐसा जान पडताहै कि इन दोनोंकी आपुसमें छिपी २ मनही मनमें प्रेमप्रीतिकी बड़ी सच्ची चाहथी. अब आगे

चाहकी बातें कहांतक लिखूं;इस चाहने हजारों घर जलाये और खोयेहैं जिनका वर्णन नहीं हो सकता।

एक स्त्रीके छापेपर सौदागरका आशिक होना ।

किसी शहर का कोई सौदागर,अति रूपवान गुणनिधान, परमचतुर नवीन तरुणथा;इस सुंदर रूप होने पर उसके मनमें प्रीति प्यारकी रीति भी अत्यंतथी और परमेश्वरने धन संपत्ति असंख्य दीथी; एक समय अपने शहरसे और देशों के देखनेके लिये अपने साथियों मित्रों और नौकरों चाकरों सहित धन संपत्ति संयुक्त बड़ी धूम धामसे विदेशको चला. कहनेको तो सौदागरथा पर सब प्रकारसे उसका ऐश्वर्य ऐसाथा कि, बादशाहोंका भी न होगा; निदान चलते २ एक ऐसे बड़े सुन्दर मनोहर शहरमें जा निकला कि,सारे शहरकी गलियोंमें परमसुहावनी नहर बहतीऔर

उसके किनारे२भांति २ के सुगंधित रंग२के फूलों फलोंके वृक्ष फूल फल रहेथे उन पर भाँति२के परमसुहावने रंग २ के पक्षी मीठी २ बोलियाँ बोल बोल मन हरे लेते थे और सुंदर सुहावने स्त्री पुरुष अच्छे२ गहने पोशाकें पहिने जगह २ बैठे गाते बजाते खेलते आनंद करते और शहरके एक ओर बिदेशियोंके सुखचैनसे उतर रहनेके लिये परम रमणीक और सुहावना बाग बना रक्खाथा जिसमें जगह २ नहरें बहतीं और परम सुहावने तालाब भरेथे; उनमें रंग २ के जलजीव कलोलें करते; उस बागके बीचमें एक बहुत बड़ा मकान था जिसमें सारे संसारके सुख चैन हर्ष आनंदकी वस्तुयें बड़े चमत्कारसे रक्खीथीं वह सौदागरभी उसमें जा उतरा; सब साथके लोग अपने मनमानती जगहौंमें उतरके आराम करने लगे कोई नहरमें स्नान कर पवित्रहो परमेश्वरका ध्यान करने

लगा; कोई तालाबके किनारे बैठ दो चार साथी मिल रागरंगमें आनंद करते; कोई बागकी शोभा देखते फिरते; कोई मनभावते खेल खेलते और वह सौदागर उस मकानमें जा उतरा जो बागके बीचमें बनाथा. उसके एक एक मकानमें अच्छी २तसबीरें बनीथीं और झाड़ फानूस रंगरंगके लटकते और युक्तिसे रक्खेथे. फर्श, मसनद, पलँग, तोशक तकियों संयुक्त बिछेथे इस चमत्कारको देख सौदागर अति प्रसन्न और अचम्भेहो चारोंओर फिरने लगा इतनेमें सांझ होगई तो उसमें ऐसी रोशनी हुई कि रातभी दिनसमान जानपड़तीथी; इतनेमें नाच होने लगा, जिसके देखनेसे सब लोग ऐसे आनंदमें मग्न हुए जिसका पारावार नहीं जब आधीरात बीतगई, तब खाना खाके पलँग पर जा लेटा तो क्या देखताहै कि मकानकी दीवारमें स्त्रियोंके हाथके छापे बनेहैं; उन सबके बीचमें

एक ऐसा छापाथा कि उसपर आँख पड़तेही बेदेखे सुने उस छापेवाली पर ऐसा आशिक होगया कि सारीरात रोते कराहते घबराहट और बेकली में काटी; जब प्रातःकाल हुआ तब सब माल असबाब धन दौलत लुटा फकीर होगया और साथियोंसे बोला कि,अरे मित्रो! जिसका जी जिधरको चाहै उधरको चलाजाय, मैंतो इसी जगहका हुआ और यहीं मर रहूंगा. उसके दुःखकी यहदशा देख जो कोई पूछता कि रातको तो तुम बडेआनंदमें थे आज तुम्हारी यह दशा किस कारणसे होगई; तो हायभरके यह कहता कि अरे मित्रो! क्या पूछते हो अंग अंगमें प्रीतिकी पीरके काँटे चुभ रहे हैं; कहां कहांकी व्यथा काहिये. जब दुःख और व्याकुलताके सिवाय कोई उसका साथी संगी न रहा तब भिखारीका वेषबना जंगल जंगल शहर २ गली २ रोता कराहता आह भरता

गुलेके समान धूर उड़ाता फिरता जो कोई उसे देखता तौ यह कहताकि, इस सिडी सौदाईने किसी सुन्दरी कान्ताके हाथके छापेपर आशिक होके अपनी महादुर्दशा की है;जब उस जीजलेको कई महीने इसी प्रकार बीते, तब एकदिन जो बुढिया उस बागकी मालिक स्त्रीकी ओरसे माल असबाबकी रक्षाके लिये उस हवेलीमें रहतीथी; उसके पैरोंपर शिर रखके रोरोंके कहने लगा कि,दुःखियोंको दुःख दूर करनेवाली अम्माजान ! सच बता कि यह छापा किस सुन्दरी मृगनयनी प्राणप्यारीके हाथका है; वह बोली कि, अरे जीजले सिड़ी सौदाई कोई ऐसे भी जी लगाता है कि, बिन देखे सुने अच्छे भले चङ्गे अपने जीको बृथा ऐसे भारी दुःखमें डाला. यह सुनके वह बोला कि, अम्माजान, तुम सच कहती हौ, पर प्रीतिकी यह रीति नहीं कि,केवलदेखनेहीसे होतीहै बहुधा सुननेसेभी

उपजती है. जब बुढियाने जाना कि, यह सच्चा
आशिक है तब कहने लगी कि, बेटा एक बड़ा
सौदागर इस मकानमें आके उतराथा उसी बीच
उसके यहां वर्षगांठका उत्साह आपड़ा; उस
उत्साहकी रीतिसे उसके घरकी सब स्त्रियोंने
अपने २ हाथसे यह चंदनके छापे उस दीवारमें
लगाये और यह छापा जिसपर तूने प्राणवारे हैं
उसकी बेटी परमसुंदरी सुकुमारी सोलह वर्ष
वारीके हाथका है; उसकी सुंदरताई और रूप तथा
सुकुमारता कहांतक वर्णन करूं; इतनाही समझना
चाहिये कि, यद्यपि मैं अति वृद्ध स्त्रीहूं पर जब
उसकी याद आती है तब मेरा जी उसके देखनेको
ऐसा तड़फता है कि, तन मन विवश होजाता है,
यह सुन अति घबराय व्याकुल हो कहने लगा
कि वह सौदागर कहांका रहनेवालाथा और किधर
गया. बुढिया बोली कि यह तो मैं नहीं जानती

कि कहांका रहनेवाला था और किधर गया पर उसके साथके लोगोंसे सुनाथा कि एक वर्ष बीते फिर इस मकान्में आवैगा उसमें छः महीने तो बीत गये छः महीनेमें अवश्य आवैगा; यह सुन कुछ आशा उस सुंदरी सुकुमारी प्राणप्यारीके मिलनेकी तौ हुई परन्तु मनका तलफना और घबराना दूना बढ़गया; निदान जब पांच महीने कुछ दिन उसी प्रकार रोते कराहते घबराते शिर टकराते बिन खाते और पानी पीते बीत गये तब अति दुर्बल और निर्बल हो मरनहार होगया तब उस बुढ़ियासे कहने लगा कि अम्माजान! अब मुझे उसके आने तक जीनेकी आशा नहीं; तुझसे यह बिनती करता हूं कि मुझे इन्हीं छापोंके पास गाड़ना; जो वह मेरी प्राणप्यारी आके मेरी कब-रको पैरकी ठोकरभी लगादेगी तो मैं कबरमेंभी जी जाऊंगा ये बातें करते करते एक दुःखभरी

ऐसी आह खैंची कि उसके साथ प्राण निकल गये. यह दशादेख बुढिया छाती कूट२ शिर पीट२ पुकार २ रोने लगी. रो पीट छाती कूट शिरपटक उन्हीं छापोंके पास उसे गाडकर कबर बनादी. उसके दूसरे दिन वह सौदागरभी अपने लड़के बालों सहित उस मकानमें आ उतरा. सब लोग जब अपनी मनमानती जगहोंमें ठहरके आराम करने लगे, तब उस सौदागरकी बेटी मकानमें फिरने लगी; उस कबरको देखतही उसके जीमें चाहका अथाह समुद्र ऐसी उमंगमें आया कि बढ़ियाका हाथ पकड एकांतलेजाके कहनेलगी कि अम्माजान जब पहिले हम इस मकानमें आके उतरे थे तब इस जगह यह कबर नथी अब इस कबरके होनेका वृत्तांत सच२ बताओ, जिसे देख मेरी छाती फटती है और कलेजा ऐसा जलताहै जिसकी पीरका पारावार और मन ठिकाने नहीं, यह सुन बुढ़िया

छाती कूट शिर पटक रोरो कहने लगी कि, मेरी प्राणप्यारी बेटी, इसका वृत्तांत क्याकहूं कि, उस की याद आतेही जी निकला जाताहै, तेरे जानेके तीसरे चौथे दिन एक सौदागर नौजवान अति रूपवान गुणनिधान छैला छबीला जिसका सर्व सामान राजोंके समान था यहां आ उतरा साँझ से आधीरात तक नाचरंगमें सब साथियोंमित्रों-सहित बड़े आनन्द में मग्न रहा फिर खानाखा जो पलँगपर जा लेटा तो तेरे हाथका छापा देख तुझे बिन देखे सुने तेरे ऊपर आशिक होगया कि, सबेरे सारा माल, असबाब, धन दौलत लुटा सब मित्रों और साथियोंको छोड मुखमोड़ भिखारी वेष बना जंगल २ शहर २ गली २ तेरे मिलने की आशासे तुझमें लवलीन हो एक वर्ष बगुलासा धूर उड़ाता फिरता निदान अति दुर्बल और अ-त्यंत निर्बलहो मुझसे कहने लगा कि अम्माजान!

उस प्राणप्यारीके आने तक मेरे प्राण नहीं रह सकते मैं मरजाऊं तौ मुझे इसी मकानमें इन्हीं छापोंके पास गाड़ना जिसमें जो वह प्राणप्यारी आके मेरी कबरमें अपने पैरकी ठोकर भी लगा देगी तो मेरे जीने समान होगा, मैंने अपनासा समझाया कि धैर्य कर तेरी प्राणप्यारी आने चाहतीहै कुछ विलम्ब नहीं पर उसे धैर्य न आया ऐसीही बातें करते २ ऐसी एक आह भर उसास ली कि, प्राण निकल गया, मैंने रोपीट छातीकूट शिर पटक उसे इस जगह गाड़ कबर बनादी यह सुनके वह सुंदरी सुकुमारी दौड़के उस कबरपरजागिरी, उसके गिरतेही कबर फटी और वह उसमें समागई और कबर फिर वैसीकी वैसी होगई यह अद्भुत चरित्र देख उस लड़कीके माँ बाप भाई बन्द रोने पीटने प्राणत्याग करने लगे सबने समझाया कि परमेश्वरकी इच्छामें किसीका

वश नहीं, धैर्य और संतोषके बिना और कुछनहीं बनपडता और सबको एक दिन मरनाहै उनका ऐसाही संस्कारथा. निदान उसके माँबाप शोच समझ चालीस दिन वहां बने रहे, चालीस वाँ करर परमेश्वरकी इच्छा समझ अपने घरको सिधारे. इस प्रेमप्रीतिके ऐसे२चरित्र कहांतक वर्णन करें कितने बटोहियोंका प्राणाघात कियाहै, जिस का वर्णन नहीं होसक्ता ॥

बादशाह और मछली पकड़नेवाले लड़केकी कहानी।

एक बादशाह मछली पकड़नेवाले लड़केपर आशिकथा; उस लड़केके देखे बिन बादशाहको चैन न पड़ता और पास बैठालनेमें लाज लगती इसलिये यह उपाय किया कि, उस लड़केको बुलाके कहाकि एक मछलीका कलेजा मेरे लिये नित्त लायाकर तुझे कुछ मिलाकरैगा. वह लड़-

का एक मछलीका कलेजा नित्त लाता और कुछ पानेके लिये बैठा रहता; इस बहानेसे बादशाह उसे देखाकरता और बादशाहकी बेटी भी उस लडके पर आशिकथी, सांझको किसी युक्तिसे उसे बुलवा लेती एक दिन बादशाहजादी महलकी खिडकीमें बैठीथी और एक बटोही उठती जवानी बहुत सुंदर महलके नीचे आ निकला बादशाहजादीको देख उसपर ऐसा आशिक हुआ कि, अपनी देहकी दशा भूलगया और वहीं खड़ा होरहा बादशाहजादी तो वहांसे उठगई और वह जहांका तहां खड़ा रहा, जब बादशाहजादी खिडकीमें आ बैठती तो उसको उसी जगह खडा देखती, जब ऐसे तीन दिन बीतगये तब बादशाहजादीने जानलिया कि, मुझपर यह आशिकहै; उस दिन सांझको जब मछली पकडने वाला लड़का बादशाहजादीके पास आया और शराबके नशे

म बेसुध होगया जब पहरभर रात गई और वह
चैतन्यहुआ तब बादशाहजादीसे कहनेलगा कि,
आज मैं मछलीका कलेजा लाना भूलगया नजाने
बादशाह मेरी क्या दुर्दशा करैंगे. बादशाहजा-
दीने उस्से कहा कि तू मत घबरा मैं तुझे मछली
का कलेजा मँगाये देतीहूं उसे यह धैर्य दे एक
लौंडीको बुला उसे एक छूरी और एक सोनेका
थाल देके कहा कि यह छुरी और थालसे उस
बटोहीके पास जाके उस्से कह कि, बादशाहजादी
तेरा कलेजा मांगती है; जो तू सच्चाआशिक है तौ
देद वह लौंडी अति निर्दयी निपट बेपीरने उस
बटोहीके पास जा छुरी औ थाल उसके आगे र-
खके जैसा बादशाहजादीने कहाथा वैसाही कह
सुनाया यह सुन बटोही बोला कि मेरा कलेजा
मेरी प्राणप्यारीके काम आवे तौ उस्से और क्या
भलीबात है यह कह छुरीले छाती चीर कलेजा

निकाल थालमें रखदिया और तडफ तडफ क
मरगया; लौंडीने कलेजा ला बादशाहजादीको
दिया और बादशाहजादीने मछली पकडनेवाले
लडकेको दे कहा कि ले अबतो तेरे प्राणबचेंगे
उसने वह कलेजाले बादशाही बाबरचीखानेमें
पहुँचा दिया.जब बाबरचीने उस कलेजाको आग
पर चढाया तब कलेजा बोला कि "जी लिया टुक
जी न रक्खा वाहजी" पर कलेजका बोलना सुन
बाबरचीने अचम्भेमें हो बादशाहके पासआक
कलेजेके बोलनेका वृत्तांत वर्णन किया, तब बाद
शाहने कलेजा अपने सामने मँगवाया सो बाद
शाहके सामने भी कलेजा वैसेही बोला; बादशा
हने निरखके देखा तौ मछलीके कलेजसे कहीं
बड़ा देखपड़ा तब बादशाहने मछली पकडने
वाले लड़केको बुलवा उस्से पूछा कि सच बता
यह किसका कलेजाहै, मछलीका कलेजा तौ इत

ना बड़ा नहीं होता उसने कहा कि आज मेरे जालमें बहुत बड़ी मछली आईथी इस्से उसका कलेजा बड़ाथा, उसके कहने पर बादशाहको विश्वास न आया क्योंकि झूठ झूठहीहै, और सच सचहीहै बादशाहने उस कलेजेको किसी आशिकका कलेजा होना निश्चय किया. यह निश्चय कर बादशाहने कहा कि इस कलेजेको एक थालमें रख बाजारमें लटकादो कोई न कोई ऐसा सिद्ध आ निकलेगा कि उस्से यह भेद खुल जायगा जब वह कलेजेका थाल बाजारमें लटकाया गया तो उसके चारों ओर हजारों लोगोंका जमावहोगया, और कलेजा क्षण २ में यही पुकारता कि "जीलिया टुक जी नरक्खा वाहजी " यह सुन सबको अचम्भा होता पर कोई उसका भेद न जानता, इतनेमें एक तपस्वी उस ओर आ निकला लोगोंका जमाव देख वहां जाके कलेजेकी पुकार सुन बोला कि,

यद्यपि नेह और चाहके मारे हुएको धैर्य नहीं हो- ता पर ऐसा खुल पडना न चाहिये घबराहट और व्याकुलताकी ओटमें आनंद छिपाहै इस बातके कहतेही वह चुपहोगया, तब उसके रक्षकोंने यह समाचार बादशाहको जासुनाया यह सुन बादशाह ने कहाकि उस तपस्वीको ढूंढके मेरे पासलावो।जब वह तपस्वी बादशाहके पास आया तब बादशाहने उसका बड़ा आदर सन्मान कर कलेजेकी पुकारने और चुपरहनेका कारण पूछा तपस्वी बोला कि जो आप थोड़ीदूर मेरे साथ चलें तौ सारा भेद खुल जाय यह सुनतेही बादशाह उठ खडेहो उसके साथ होलिये वह तपस्वी कलेजाका थाल हाथमें ले आगे चला और उसके पीछे २ बादशाह चले जातेथे उनके पीछे लोगोंका जमावथा और ऐसा देख पड़ताथा कि कलेजेका थाल उस तप- स्वीको हाथ पकड़े खैंचे लिये जाताहै निदान जब

उस जगह तपस्वी पहुँचा जहां वह बटोही बेकले-
जे धरतीके नीचे दबापड़ाथा उस जगह पहुँचते
ही वह कलेजा उचटके धरतीमें समागया और
बादशाहजादी उसी खिड़कीमें बैठी यह चरित्र देख
रहीथी उसके जीमेंभी विरह और नेहकी पीर ऐसी
उमंगसे आई कि खिडकीसे उछल उसी जगह आ-
गिरी और धरतीमें समागई, यह देख बादशाहके
जीपर जो दुःख बीता और महलमें रोने पीटने
छाती कूटने शिर पटकनेकी पुकार मची उसका
वर्णन नहीं होसकता कि कहानी ऐसी बढ़े जिस
का अंत नहीं इस नेहकी पीरके गंभीर सागरकी
थाह नहीं क्या वर्णन कीजिये चुपही रहते
बनिआताहै ॥

खास महलकी खवासपर एक खिदमत-गारके आशिक होनेकी कहानी।

बुगदादका एक बादशाह बड़ा कंजूस मक्खी-

चूस था कि सिपाहीको तन्ख्वाह समय पर न देत
और जिस्से कुछ वस्तु मोललेता उसको दामों
लिये वरसों ऐसा फिराता कि वह लाचार हो दा
छोड़ बैठ रहता और इनाम एकराम देनेकी तं
क्या चर्चाहै, सारे नौकर, सिपाही और प्रजा
सब दुःखी और उदासीन रहते यह दशा देख
हकीमोंने यह सम्मत किया कि कोई ऐसा उपाय
करना चाहिये जिसमें बादशाहकी कंजूसी मिटे
और सिपाही प्रजा सुखचैनसे सुखी रहै यह सोच
विचार एक ओषधी बना शीशीमें भर बादशाहके
पास लाके कहा कि यह बड़ी अद्भुत वस्तु हम
आपके लिये बनाके लायेहैं बादशाहने कहा कि
इसका गुण वर्णन करो उन्होंने कहाकि जो इस
शीशीमेंसे एक सींक डुबाके हाथीके दांतमें लगा
ई जावे या पर्वत पर एक बूंद उसकी पड़े तौ वह
हाथी और पर्वत तुरंत पानी होके बहिजा

बादशाहने यह सुन एक बड़ा पर्वत समान हाथी मँगाके और उस शीशीमेंसे सींक डुबा हाथीके दांत पर उस्से लकीर खिंचाई लकीरके खींचतेही हाथी पानीहो बहगया यह देख बादशाहने प्रसन्न और अचम्भेमें हो हकीमोंको बहुत इनामदे विदा किया और वह शीशी खिदमतगारको देके कहा कि इसे महलमें लेजाके मिठिया खवा-सको देना, और यह कहना कि इसे बडी चतुराई व युक्तिसे रक्खै; जो इसमें कुछ बाधा होगी तौ मैं बडा भारी दंड दूंगा. जब खि-दमतगार शीशी लेके चला तौ मनमें विचारा कि, ऐसी अद्भुत ओषधीको थोड़ी निकाल लेना चाहिये; मुझे चोरीमें कौन पकड़ सक्ता है यह विचार उस शीशीसे थोड़ीसी ओषधी निका-लली और शीशी वैसीकी वैसी बंदकर डेवढीपर जा मिठियाको बुलवा वह शीशी सौंप जो बाद-

शाहने कहाथा सो कह सुनाया पर मिठियाके
रूप, रंग, शृंगार, हाव, भाव, कोर, कटाक्षका चम-
त्कार देख उसकी चाहके जालमें ऐसा फँसा कि
अपना जीना उसे अत्यंत कडुवा लगा, तब मनमें
सोचा कि इसके देखे बिन जी नहीं रहसक्ता और
इसके मिलनेका कोई उपाय नहीं. इसमें यही
भला है कि इस ओषधीको पीके मरजाना चाहिये
पर जो यहां मर रहूंगा तौ संसारमें बड़ा अपयश
होगा; कि मिठिया खवासपर आशिक होके मर
गया; इसलिये यह उचित है कि, घरमें जा इसे
पीके मर रहिये; यह विचार घरमें आ उस ओष-
धीको पी सोरहा परंतु मरा नहीं जब बादशाह
महलमें गये उस शीशीको मँगाके देखा तो
कुछ खाली पाई यह देख बड़ा क्रोधकर बोले जि-
सने यह चोरीकी है उसे अभी यह पिलाऊंगा
यह सुन सब खवासें डरती २ हाथ जोड़े आके

बादशाहके पैरोंपर शिर रख कहनेलगीं कि,लौंडि-योंकी क्या सामर्थ्य जो आपकी वस्तु चुरावैं; यह शीशी यहां ऐसीही आईथी, यह सुन बादशाहने बाहर आ खिदमतगारको बुलाके कहा कि, अरे दुष्ट यह शीशी खाली कैसे हुई; उसने सोचा कि मुझे तौ मरनाही है और उस हलाहल विषसे न मरा अब सच २ कह देना चाहिये; जिसमें बादशाह मुझे मारडाले तौ इस विरहकी पीर और व्यथासे छूट जाऊं; यह विचार हाथजोड विनती की, कि यह अपराध मुझसे हुवा है कि, जितनी शीशी खालीहै उतनी मैं पीगया पर न मरा बाद-शाहने हकीमोंको बुलाके कहा कि, क्या कारण है कि, यह खिदमतगार इतना विष पीगया और न मरा. हकीमोंने उसकी नाड़ी देखके कहा कि यह देखनेको जीता है पर इसको मराजा-निये. यह किसीपर आशिक है जो अपनी प्राण-

प्यारीको एकबार देखने पावै तौ उसीक्षण पानी
होके बहजाय; बादशाहने फिर हकीमोंसे पूंछा
कि, यह कैसे समझ पड़े; हकीमोंने आपसमें
सोच समझ यह कहा कि, जो सुन्दरी इसके हाथ
से विषकी शीशी लेगई उसीकी अलक नागिनने
इसे डसाहै यह सुनतेही बादशाहने ख्वाजा-
सरासे कहा कि, एक मकान खाली करवा और
मिठिया खवासको बुला इस्से मिलादो ख्वाजा-
सरा बादशाहका हुक्म पा मकान खाली करवा
मिठियाको वहां बुलाया. वह खिदमतगार उसे
देखतेही लाज और भयके जहाजको अपयश
के समुद्रमें डुबा उस्से लिपट पानी हो
बहगया पर उस पानीमें एक लाल देख
पड़ा; बादशाहने हकीमोंसे पूंछा कि यह लाल
इस पानीमें कैसे उपजा, हकीमोंसे कहा कि, यह
उसका कलेजा है जो नेहकी गरमीसे पत्थर हो

गयाहै; बादशाहने उस लालको उठा मँगाया और जवाहर खानेके दारोगाको सौंपके कहा कि, इसे अच्छी तरह रखना; ईदके दिन इसे शिरपेचमें लटकवा शिरपेच अपने शिरबांध हम ईदकी निमाज पढ़ने जावैंगे जब वह ईदका दिन आया तब जवाहरखानेका दारोगा वह लाल शिर-पेचमें टकवा बादशाहके सामने लाया बादशाह उसे शिरपर बांध निमाजपढ़ने गये;वहांसे निमाज पढके दरबारमें अमीरों वजीरोंकी नजरेंली जब मिठिया नजर लाई तौ बादशाहके शिरपेचसे वह लाल चटकके मिठियाके पैरोंपर गिरपड़ा; लालके पड़तेही मिठिया डरके भागी, भागनेसे उसके पैरकी ठोकर उस लालमें लग गई ठोकर लग तेही लाल पानीहो बहगया यह देख मिठिया अत्यं-त दुःख पाय घबराय उस पानीमें जागिरी; गिर-तेही वहभी पानीहो बहिगई यह चरित्र देख मिठि-याकी हम जोली वाली सब खवासैं रोने पीटने

लगीं; इस नेहके ऐसेही ढंग जगह जगह नये नं
प्रकट होतेहैं सो कहांतक लिखे जावैं ॥

एक कसबी रंडीपर एक उडती जवानी सुन्दर मनुष्यके आशिक होनेकी कहानी ।

एक परमसुंदर मनोहर तरुण मनुष्य एक मृ
नयनी पिकबयनी, चम्पकबरनी, मनहरनी क
बी रंडीपर आशिक हुआ जब वह रंडी कहीं नाच
ने या मुजरेके लिये जाती तौ वह भी उसकेसाथ
वहीं जा पहुँचता और उसका गाना नाचना दे
सुनकर उसपर बार २ जाता. एक दिन वह रं
किसी धनवानके घर नाचनेके लिये गई और व
भी वहां जापहुँचा; उसदिन उस रंडीके नाचने
ऐसी अद्भुत सुंदर युक्ति थी कि जब खडी होके गा
भरती तौ बिजलीके समान चमक जाती औ

जो हथेली पर हथेली रख गर्दनझुको आगेचलती तो ऐसा जानपडताकि वह कठोर चित्त किसी बेकलेजेका कलेजा दोनोंहाथोंसे मलतीहै. जो बाँह को शिरपर रखके हथेलीको हिलाती तो यह समझ पड़ता कि अपने गाहकोंसे कहती है, कि अपने घर जावो; यहां सुंदरताके मालका मोल बड़ा महँगाहै और जो दोनों हाथोंमें दुपट्टेको शिरसे आगे खींचके गति लेती, तौ यह समझ पड़ता कि चांद पवानेके नीचे आगयाहै, और जब दुपट्टेको मुँहके ओर करलेती तौ लोगोंके मन परदेमें लौट होजाते, और गानेकी यह दशाथी, कि, जो तान-सेन होता तौ उसकी तान सुन गानविद्यासे हाथ उठाता और गिटकरी मानों फुलझडीथीं उस जगह ऐसी समाथी कि, सारे सभाके लोग चित्र लिखे चुपचापथे और वह जवान यह कहता कि अब ऐसा व्याकुलहूं कि, धैर्य नहीं आता

उसकी यह बातें सुन उस रंडीके चेहरे पर झुलझुला-
हट आगई और उसपर कुछ दया नकी, तब वह
जवान बोलाकि, विरहकी पीर जिसपर बीते सोई
जाने, या ईश्वर जाने, बेपीरकी बलाजाने, फिर
एक बेर जो वह नाचतीहुई आगे बढके पीछेको
हटी तौ उस जवानने उसके कानमें कहा कि,अब
मुझे धैर्य नहीं आता अब मराजाताहूं मेराजी-
ना तेरे हाथहै, एक मुर्देको जिलाना क्या बातहै
यह सुन वह बोली कि, सब ऐसेही चाहमें कहतेहैं
कि हम मरतेहैं पर किसीको मरते न देखा; यह
सुन वह अरमान भरा जवान तमंचा अपनी छा-
तीमें मार धरती पर गिरके लोट गया; यह दुःख
दशादेख वह रंडी नाच रंग भूल उस जवानका शिर
अपनी गोदीमें रख शिर कूट छाती पीट रोरोके
यह कहती कि, हाय मेरे प्राणप्यारे तेरे जीमें यह
क्या आया;जो ऐसे अपना प्राण गवांया. उससम-

उस सभाकी यह दशा हुई कि आनंदका दुःखहो-गया. जब यह समाचार उस जवानके भाईबंदोंने सुना तब सब दुःख सोच और क्रोधसे भरे दौड़के वहां आये, और उस रंडीको तरवार तमंचा बरछी दिखा डरवाके कहने लगे कि इसने इस जवानको मारा है; इसेभी मारडालना चाहिये. यह सुन वह रंडी सबके पैरोंपर शिररखके कहनेलगी कि जो मुझे मारडालना होतो बिलंब मत करो; मेरा जीनेसे मरना भला यह नहीं चाहिये कि यह मरजाय और मैं जीती रहूं; यह सुन वह अधमरा बोला कि इसे मत सतावो इसने मुझे नहीं मारा है; मेरे नसीबमें ऐसाही लिखाथा यह समाचार सुन उस जवानकी माँ डोलीमें सवार हो वहाँ आके बड़ा विलाप करने लगी; जब उसकी लाश घरलेगये तौ वहां ऐसा कोहरा ममचा कि वर्णन नहीं कियाजाता निदान उसे नहलाबहुत

साफ सुथरे कफनसे कफना संदूकमें रख उसके ऊपर हरा दुशाला डाल तिसपर फूलोंकी लहलहाती चादर डाल गाड़नेको सब कुनबेके लोग रोते पीटते लेचले उसके साथ वह रंडभी कपड़े फाडती शिरके बाल नोचती खसोटती पवनमें उड़ाती और मुँहमें तमाचे मार मार लोहू लुहान करते चली जातीथी; जब उस जवानको कबरमें उतारा तब वह रंडीभी कबरमें गिरनेलगी और हाथ जोड़ सबसे बोली कि तुम मेरे ऊपर दया करके मुझेभी इसके साथ गाड़दो;तौ वही मेराजीना है. पर सबने उसे समझा बुझा खींचलिया और उस जवानको दफनकर घरको चले और उस रंडीसेभी कहाकि तूभी चल वह बोली कि मेरा घर तो यहीं है; जब लोग बहुत समझाने बुझाने लगे तब वह शिरझुका चुप होगई और कुछ न बोली तब सब लोग लाचार होके चले आये और

वह वहां बैठी रही; जब उस जवानकी माने उस रंडीकी यह दशा सुनी तब डोलीमें बैठ वहांआके कहने लगी कि बेटी यहां क्या यह जी उठेगा: तू मेरे घर चल मैं तुझे बेटी बहूके समान अपने घर में रक्खूंगी और अपने वशभर तेरी सेवा करूंगी उसने बहुत समझाया पर वह कुछ न बोली शिर झुकाके रोयाकिया, शिर उठाके देखाभी नहीं कि कौनहै, और क्या कहतीहै, वह लाचार होचली गई उस रंडीकी यह दशाथी कि, दिन भर तो कबरकी झारी बुहारी किया करती और रात भर कबरसे लिपटके लेटे २ रोया करती जो कोई जबरदस्तीकुछ खिला पिला देता तो खा पी लेती; उसका जीना दूसरेके हाथ था, निदान उसी दशा में रोते २ उस कबरसे लिपटके मरगई और आशिकोंमें अपना नाम कर गई; तब लोगोंने उसी कबरके पास उसेभी गाड़के उसकीभी कबरबनादी

५

एक गृहस्थकी बेटीपर एक मनुष्य के आशिक होनेकी कहानी॥

अकबर बादशाहकी बादशाहतमें लखनऊके काजीका बेटा अपने साथियोंके साथ शहरकी सैर कोनिकला, एकगलीमेंकिसीके कोठेकी ओर आंख पड़गई तो उसपर एक परमसुंदरी कांतासे चार आंखें होगईं वह कांतातो नीचे उतरगई पर काजी का बेटा उसके ध्यानमें वहीं बैठगया, साथके लोगों ने बहुत समझाया पर वह वहांसे न उठा और चुप बैठारहा जो कोई कुछ खाने पीनेकी वस्तुदेता तो उसकी ओर देखता भी नहीं; जबतीनादिनऐसेही बीतगये और वह धरतीपर गिर मरनहार हुआ तब महल्लेके लोगोंने उस लड़कीके बापसे कहाकि यह जवान तेरी बेटीके देखनेकी चाहमें मराजाता है जो उसे एक नजरभर देखले तो जीजाय नहीं तो मरजायगा तो तुमको बड़ा पाप होगा; उसने सब

महल्लेके लोगोंके कहनेसे अपनीबेटीसे जाकहा कि बेटी! तू टुक उसे दिखाई दे आ इसमें कुछ बुराई नहीं क्योंकि सब महल्लेके लोगोंका यह सम्मतहै जब वह लड़की उसके सामने आई तब वह आंख उठा उसे देखके बोलाकि बस तुम्हारे देखनेकी आश थी सो पूरी हुई अब हम बिदा होतेहैं, यह कह मरगया उसके मरतेही वह लड़कीभी उस मुरदे पर गिर और उसे लपटके मरगई सबोंने चाहा कि, उनदोनों को छुटाकेअलग२गाड़ें पर नेहकीमिलापीकबछूटतेहैं तब लाचारहो दोनोंको एकही कबरमें गाड़ दिया इस चाहके ऐसेही अद्भुत चरित्र हैं जिसका अंत नहीं कहांतक वर्णन किया जावे॥

अथ त्रियाचरित्रका दूसरा प्रकरण।

पहिली कहानी॥

एक मनुष्य बड़ा नट खट, स्त्रियोंके छलबल

सुनके अपनी स्त्रीको ऐसा ताके रहता कि, स्त्रियें या किसी बुढियादाईतकको भी उसके पास नआने देता पर यह न समझता कि सब स्त्रियां एकसीनहीं होतीहैं जैसे एक हाथकी पांचों उँगली एकसीनहीं होतीं निदान वह मूर्ख उसके पास सदा बैठा रहता जो कभी किसी आवश्यक कामके लिये जाता तो घरके दरवाजेके बाहरसे ताला लगा जाता. एक दिन घरके बाहिरी दरवाजेमें ताला लगाके कुछ आवश्यक कामके लिये गया इतनेमें एक चने बेचनेवाला उस गलीमें आपुकारा उसकी स्त्रीने चनेवालेकी पुकार सुन दरवाजेके पास आ थोडी सी कौडियां एक २ करके किवाँडकी दरारसे बाहर निकालदीं और कहा कि इन कौड़ियोंके चने तोलके इसी दरारकी राहसे भीतर डालदे जब उसने उसी दरारकी राहसे चने फेंक दिये तब वह उठा ले गई इतनेमेंउसका खाविंद दरवाजे

पर आ पहुँचा चनेवालेको देख किवाँड़ खोल अंदर जाके बडा क्रोध करके बोला कि अरी अभागी ! भलेमानसोंकी स्त्रियां कहीं ऐसे दरवाजे पर आके कोई वस्तु मोल लेती हैं ? यह सुन वह स्त्री कहने लगी कि अरे मूर्ख! तू वृथा क्रोधकरता है; कोई भी अपनी स्त्रीको ऐसे कैदमें रखताहै जो कोई बुढियाभी घरमें रहती तो कोई घरका काम न अटकरहता और घरकी वस्ती दूनी देखपडती यह सुन वह बोला कि मुझे स्त्रियोंका विश्वासनहीं जब चाहें तब एक नया छल बनाके खडा करदें यह सुन वह यों कहने लगी कि अरे महामूढ ! तू यह बातें वृथा करताहै, जो स्त्रियां छलीहैं वे अपने खाविंदके शिरपर घड़ा धरकर वाहती हैं और कुछ बश नहीं चलता, और अपनी तो वही दशाहै कि "कर तो डर, न कर तो डर" "शेर खाय तो मुँह लाल, न खाय तो मुँह लाल"

यह बातें सुन वह कहने लगा कि वे औरही नामर्द होते हैं जिनकी स्त्रियां छिपे २ खरची जाती हैं चतुर लोगोंकी स्त्रियोंकी क्या सामर्थ्य कि किसीसे आंख मिलासकें, यह वचन सुन वह परमचतुर चुप होरही पर मनमें कहने लगी कि देखूं तो भडुवे वह तेरी चतुराई और चौकसी कैसी तेरे शिरपर डालतीहूं कई दिन बीते, वह स्त्री कलेजेकी पीरका बहाना कर लोटने लगी, उसके खाविंदने बहुतेरे बड़ेबड़े नामी वैद्यों को दिखलाया पर किसीने उसका भेद न पाया एक चतुर वैद्यने कहा कि इसकी ओषधि धन्वन्तरि से भी नहोसकैगी, जानिये इसे कौनसा रोग हुआ निदान जब उसका खाविंद अपने वशभर सब कहींकी औषध करचुका तब निराश और उदासहो यह कहने लगा कि नेहके वैद्यकी दुकान कहां है? प्राणोंकी औषधिका क्या नामहै!

खाविंदकी यह बातें सुनके कहने लगी कि तुमने मेरे रोग दूर करनेके लिये बहुतेरे उपाय किये पर किसीने कुछ गुण न किया जो कुछहुआ सो हुआ अब एक काम और करो कि किसी दाईको बुला के दिखला देखो क्योंकि स्त्रियोंकी ओषधि स्त्रियों हीसे बन पड़तीहै; यहसुन वह कहने लगा किं प्या-रीतेरे क्लेश दूर करनेके लिये मुझे सब कुछ अंगी-कारहै. निदान वह बुद्धिहीन एक बुढिया संसार की नटखट छलीको अपने घर बुला लाया. उस दाईने एक २ कलसे उसे देखा तो कोई कल बे-कलीकी न पाई तब यह अचंभा देख उसबीमार मक्कारासे बोली कि तूने छलकरके इस विचारेको क्यों दुःख दे रक्खा है' यह बात उस दाईके मुँहसे सुन वह कहने लगी कि,अय गुरुगंभीरदाई इस मेरे छलका यह कारण है कि इस अभागीको मेरा कुछ विश्वास नहीं; यद्यपि मैंने इसके बिना आज तक

किसी परपुरुषका मुँह नहीं देखा, पर इसने मेरेसा-
मने एक बड़ा बोल बोलाहै उसका फल इसेदिखाना
चाहतीहूं इसमें कुछ क्यों नहो;यह सुन दाई बोली
कि यह कितनी बड़ी बातहै इसमें तेरी साथीहूं नि-
दान उसके पाससे उठ उसके खाविंदके पास आके
कहने लगी कि तूने ऐसी चंद्रमुखी सुन्दर कान्ताको
घुला डाला,यह सुन वह बोलाकि अब मुझसे कु-
छ नहीं बन पड़ता वही देखताहूं जो भाग्य दिख-
लाताहै. दाई बोली तुम वृथा इतना सोच करतेहो
परमेश्वरकी कृपासे मैं इसे एक दिनमें अच्छी कि-
ये देतीहूं, यह सुन वह बोलाकि इससे क्या भलाहै
भलाई और पूछ२उसके आराम होनेके लिये धन
तौ क्या वस्तुहै जो प्राणभी काम आवै तौ मैं नि-
छावर कर डालूँ यह सुन बुढिया बोली कि, जहां
तूने इतने रुपया खर्च किये तहां पांचसौ रुपये
और खर्चकर जो तेरी प्राणप्यारी एक दिनमें चंगी

अच्छी न होवै तो तरवारसे मेरा गला काटडालना. मेरी बेटीकी ऐसीही दशा होगईथी भाग्यवश अनायास एक महात्मा आनिकले, मुझे अतिदीन दुःखी देख दयाकर पांचसौ रुपये लगाके ऐसा एक टोटका बनादिया कि,एकही दिनमें मेरी बेटी भली चङ्गी होगई,उस टोटकेको मेरा बेटा प्राणके समान रखताहै, जो तू पांचसौ रुपये खर्च कर तो रातभरके लिये बेटे की चोरीसे उसे मैं तेरे घरले आऊं और तेरी जोरूको अच्छी कर फिर वहीं पहुँचादूं पर यह बात किसीको प्रगट नहो क्योंकि मेरे बेटेका स्वभाव बडा बुराहै,जो कहीं जानपावैगातो मुझे जीता न छोडैगा यह बात सुन वह बुद्धिहीन बुढ़ियाके पैरोंपर शिररखकर कहने लगा कि,तू मेरे प्राण बचाये देतीहै मैं अपनेजीते जी तुझसे उऋण न होऊंगा; तब वह नटखट बुढ़िया बोली कि, एक शर्त है कि,उस टोटकेको तूही अपने शिरपर

ला और वहीं फिर पहुँचादे निदान जो२बुढ़ियाने कहा सो२उसने सब मान लिया, क्योंकि "मरता क्या न करता" निदान यह मक्कारा उस उल्लूको जालमें फांस अपने घर आई और एक अच्छेसे रंगे जवानको बुलवाके उससे कहने लगी कि, तेरे मजे उडानेके लिये मैं एक सोनेकी चिड़िया लाईहूं पर एक मटकेमें बैठके तुझे चलना पड़ेगा यह सुन वह जवान मस्तान ताल ठोंकके मूछौं पर ताव देके बोला कि,मटका तो क्या जो छोटेसे लोटेमें बंद करके ले चलोगी तोभी चलैंगे और जो लड़नेको कहोगी तो शिर तोडैंगे मुँह न मोडैंगे; वह बुढ़िया उस मस्तान जवानको अपने घरमें बैठाके उस उल्लूके पास आई इतनेमें सांझ होगई तब उल्लूके पट्ठेको अपने घरलाके उस मस्तान जवानको छिपे २मटकेमें बिठा बोली कि लो मियाँ साहब यह टोटकेका मटकाहै, इसे अपने

शिरपर रखके धीरे २ लेचलो; वह काठका उल्लू मटकेको शिरपर चढ़ाके अपने घर लाया; यह न समझा कि इसमें शिर झुकानेकी बात है; निदान बुढियाने उसकी जोरूको अच्छे साफ सुथरे कपड़े पिन्हा शृंगार कर अतर लगा पान खिला हार पान रखवा चारोंओर बहुतसी अगर कपूरकी बत्तियां जलादीं और घरवालेसे बोली कि तुम इस कोठरी में मत जाना उसमें प्राणोंका बड़ा खटकाहै; वह बिन सींग पूछका पशु कोठरीके दरवाजे पलँग पर तोशक बिछा सरहाने तकिया लगा पैर फैला केसोरहा उधर वह रंगा मस्ताना जवान मटके से निकल कामदेवका पलीता निकाल उसकी जोरूके छिपे हुये दीपकमें सारी रात जलाता रहा भोर होते २ वह पलीता ठंढा होगया और वह स्त्री भली चङ्गी उठ बैठी और वह मस्ताना जवान मटकेमें जाछिपा तब बुढ़िया बोलीकि

मियां साहब जागो अपनी जोरूको देखो उसने जो देखा तो वह अच्छी भली चंगी बैठी है, यह देख दौड़के बुढ़ियाके पैरों पर गिरपड़ा, बुढ़िया बोली कि अभी थोड़ी रात और अंधेराहै इस मटकेको मेरेघर पहुँचा दो जो उजियाला होजायगा तो मेरे और तुम्हारे दोनोंके लिये बदनामी होगी निदान वह अयान जवान बैलसमान मटका शिर पर रख बुढियाके घरले चला, दैवयोगसे एक हलवाई अपनी दुकानके नीचे कराही धोरहाथा उसने देखा कि एक मनुष्य अच्छे सुथरे कपडे पहिने मटका शिरपै धरे आताहै, उसे देखने लगा तब वह निर्बुद्धिभी हलवाईके पास आपहुंचा उसे देख लाजके मारे आंखें फेरलीं और कराहीके धोनेसे उस जगह कीचड़ होरहाथा उसमें जो उस उल्लू का पैर पिसला तो मुँहभरा गिरा और मटका फूटगया उसके भीतरसे मस्ताना जवान निकल

झाड़ पोंछ जूता हाथमें ले उस उल्लूका गला पकड़ कहने लगा कि, अरे भड़ुवे मस्खरे तू भलेमानसों पर मटका पटकता है परमेश्वरने कुशलकी, जो कोई ठिकरा मेरी आंख और नाकमें लगजाता तो तेरा शिर मारे जूतियोंके गंजा करडा-लता. इधर तो मस्तान जवान उसकी दुर्दशा कर रहाथा, उधर बुढ़िया हाथ पकड़े कह रहीथी कि, बलालूं तुमने मुझे बड़े संकटमें डाला यह मटका हीरे पन्नेके दानोंसेभी भारी मोलका था मेराबेटा मुझे छूने न देता था और कहता था जोतू इसमटकेमें हाथलगावेगी तो तेरी टांगेंचीर डालूंगा वह मेरी क्या दुर्दशा करेगा वह काठका उल्लू दोनों ओर से चौकन्नाथा निदान मस्तान जवानसे हाथ जोड़ पैरोंपड़ विनतीकर और बुढ़ियासे कुछरुपयये देकर छूटा पर जोरूके आराम होनेके आनंदमें इसनुकसान और बेहुरमतीको कुछ मनमें न लाया

और हलवाई कहता कि ऐसा चरित्र कभी नहीं देखाथा जो आज देखा यह विना किसी कारण नहीं स्त्रियोंके ऐसे चरित्र होते हैं परमेश्वर उनसे बचावे जैसे कहाहै कि "तिरिया चरित न जानेकोय, खसम मारके सत्तीहोय" ॥ १ ॥

दूसरी कहानी ।

एक रँगीला रँगरेज एक व्यभिचारिणीस्त्रीकी चाहके रंगमें सराबोर डूबा रहता रंगरंगके दुपट्टे रंगरंगसे उसे उढ़ा अजब रंगके भांति२के रंग उठा आनंदके रंगमें मग्न रहता. कभी आप उसके घर जाता और कभी किसी युक्तिसे उसको अपने पास बुला मजे उड़ाता. एकदिन उस रँगरेजको उसके घर जानेका अवकाश न मिला और वहभी किसी कारणसे उसके पास न आसकी; जब सांझ होने आई तब उस रंगरेजने अपने शागिर्दसेकहाकि बेटा आज तू मेरी प्यारी को बुलाला, वह दौड़गया

और उस्तादका संदेशा कह सुनाया. वह छत्तीसी नई उठती जवानी शागिर्दको पाके उस्तादको भूलगई और शागिर्दको चित्रसारीमें लेजाके उसे छाती लगा कहने लगी कि, प्यारे आज तू मेरी चाहके दुपट्टे को अपने समागमके शाहावसे ला-लौलाल करदे; यह उसे अपनी रानोंमें दबाके ऐसा निचोड़ा कि, आप तो लाल २ होगई और वह शा-गिर्द ऐसा होगया जैसे कोई खार देके रंग उतारले-जब उसको बड़ी विलम्ब हुई न उस रँगरेजकी प्या-रीको लाया, न आके कुछ जवाब सुनाया तब वह रँगरेज अपनी प्यारीकी चाह और विरहसे व्याकुल हो क्रोध कर तलबार हाथमें ले उसके घर पहुँचा दरवाजेसे पुकारके कहने लगा कि, किवाड़ खोल, उसने उसकी आवाज पहिचान उसके शागिर्दको कोठरीमें बन्दकर किंवाडे खोलदिये जब वह घरके भीतर आया तो उसको क्रोधमें देख कहने लगी कि

कुशलतोहै?इतने क्रोधका क्या कारणहै? वह बोला कि, मैंनेतुम्हारेबुलानेकेलियेअपनेशागिर्दकोबोला था एकपहरबीता न तुम गईं,न वह दुष्ट जवाब लेके पहुँचा;यह सुन वह बोली कि, इस तुम्हारी समझ पर बार२जाना चाहिये. भला कोई गृहस्थ स्त्रीके पास ऐसे नादान छोकडोंके हाथ संदेशा भेजताहै ! किसी बूढी स्त्री चतुरको ऐसी जगह भेजते हैं कि, समय विचार एक युक्तिसे कहै कि,दूसरा न समझ सके उस छोकरेने दरवाजेसे पुकारके कहा कि चलो तुम्हें मियांने बुलायाहै, यह कह भागा चलागया मैं मारे लाजके मरती हूं कि,पड़ोसके लोग अपने जीमें कहते होंगे कि इस भलीमानसकी भी किसी से लगावट है.यह बातें वह कह रहीथी कि,उसका खाविंद दूरसे देख पड़ा,उसे देखतेही उस रंगरेजका रंग उड़गया और मारे डरके थर २ कांप २ कहने लगा कि, अरी मेरी प्राणप्यारी अब मेरे प्राण

कैसे बचैंगे वह बोलीकि घबरावो मत तुम अपनी तलवार निकाल घुमाते आवबाव बकते झुकते चले जावो मैं समझ लूंगी उसके सिखानेसे वह वैसेही नंगी तलवार घुमाते आव बाब बकते झुकते चलागया पीछेसेउसके खाविंदने आके पूछा यह कौनथा जो नंगी तलवार घुमाते आवबावबक-ते झुकते भागा चला गया वह बोली कि आजपर-मेश्वरने बडी कुशलकी कि इस समय तुम आपहुँ-चे नहीं तौ मुझे जीता न पाते एक लडका भागता हुआ यहां आके इस कोठरीमें घुसगया और भीतरसे किंवाडा बंद करालिये पीछेसे यह सौदाई नंगी तलवार लिये आपहुँचा और कहने लगाकि उस लड़केको निकालदे नहीं तौ तेरा शिरकाटता हूं यह सुन मैं घबराई इतनेमें परमेश्वरने बड़ी कृपाकी कि तुम देखपड़े तुम्हारे देखतेही वह जाता रहा जो तुम्हारे आनेमें कुछभी विलम्बहोता तौ

वह मुझे बिन मारे न छोड़ता, यह सुन उसका खाविंद बोला कि वह लड़का कहाँहै उसने कहाकि इस कोठरीमें तब उसने कोठरीसे उसको निकाल बड़ा प्यारकर धैर्य दे अच्छा २ खाना खिलाके कहा कि, यह घर तुम अपना जानौ जब जी चाहै तब आया करो. अब यह देखा चाहिये कि उस स्त्रीने दोयारोंको अपने खाविंदके सामने घरसे निकाल दिया और खाविंदको प्रसन्नरक्खा स्त्रियों से क्या कोई पार पावै.

तीसरी कहानी ।

एक चतुर मनुष्यने स्त्रियोंके छलौंको सुनके उनके चरित्रकी बहुतसी पोथियाँ बनाईथीं कि उनके पढ़नेसे कोई स्त्रियोंके छलमें न भूलैं और वे पोथियां सदा अपने पास रखता जहांजाता अपने साथ लेजाता एक समय उन पोथियों सहित किसी शहरमें जाके एक बहुत अच्छे मकानमें जाउतरा

उस मकानके सामने एक बहुत अच्छा महलथा उसमहलकी खिड़कीमें एक सुन्दर चंद्रमुखीकांता बैठीथी उस मनुष्यके असबाबमें बहुतसी अच्छी २ पोथियां देख अचंभेमेंहो, लौंडीके हाथ उसे अपने घरमें बुलाके कहाकि, आपके साथ पोथियां बहुतसी होनेका क्या कारण है, उसने उत्तर दियाकि, स्त्रियोंके चरित्रकी यह सब पोथियां मैंने लिखीहैं कि; इन्हें पढ़के कोई तिरियाचरित्रके जालमें नफँसे यह सुन वह चुप होरही और कहने लगीकि; विदेशीकी सेवा करना और उसे सुख देना बहुत अच्छीबातहै इसलिये मेरी यह विनती है कि; आप कमरखोल;कपडे हथियार उतार इस पलँग पर आरामकीजिये फिर अपने मकानमें चले जाना, जब वह मनुष्य उसके कहनेके अनुसार कपडे हथियार उतार पलँगपर जा बैठा तब रंग रंगके सुथरे शीशे भांति २ की सुगंधित शरा-

बोंसे भरेहुए और वैसेही गिलास आगेरख शराब पिला अपने समागमके नशेमें अत्यंत गडाचूर किया इतनेमें उसके खाविंदने दरवाजेपर आके पुकाराकि; दरवाजा खोलदो, यह सुन उसने लौंडी से कहा कि मियांसाहब आयेहैंजब लौंडीदरवाजा खोलने चली तब वह मनुष्य बोला कि;अब मुझे क्या करना चाहिये वह बोली कि, तुम इस संदूकमें जा बैठो मैं ऊपरसे बन्दकर ताला लगाये देतीहूं, वे उस संदूकमें, बंद हुए और उसके खाविंदने घरमें आके पूंछाकि, यह क्या चरित्र है वह, बोलीकि, आज एक मेरा बडा प्यारा महिमान आया है उसके कारण यह सब है. उसने पूंछाकि, वह कहां है बोलीकि; तुम्हैं देख मैंने उसे इस संदूकमें बंदकर दिया और यह ताली मेरे पासहै जब उसका खाविंद तालीले संदूक खोलने चला तबतो वह कहकहे मारके हँसी और कहने लगी कि,तुमतो बडे चतुर

थे पर मैंने आज तुम्हें अच्छा बहलाया यह तुम न सोचे कि जो मैं ऐसा काम करती तौ तुमसे कैसे कहदेती यह सुन उसका खाविंद लज्जित हो पलँगपर आ बैठा और वह उसकी गोदमें लोट अपना शिरपकड़ कहने लगी कि आज मेरे शिरमें ऐसी पीर होती है कि प्राण निकले जाते हैं कुछ ओषधि लाओ जिसके लगाने खाने से यह पीर मिटै और लौंडीसे कहा कि यह कपडे हथियार जिसके लाई है उसे देआ उसका खाविंद ओषधि लेने गया तब उसने सन्दूक खोल उन्हें निकालके कहाकि क्योंजी ? यह चरित्र तुम्हारी पोथियोंमें लिखाहै यह देख सुन वह पोथियों वाला अपने प्राणले भागा और अपने मकानमें आके सारी पोथियोंमें आग लगादी भला तिरियाचरित्रके जालसे कोईभी निकल सकताहै ? ॥

चौथी कहानी।

एक सौदागर सौदागरीके लिये विदेशको गयाथा उसके जानेके पीछे उसकी स्त्री यारोंको बुला २ बड़े आनंद और चैनसे मजे उड़ाने लगी बहुत दिन बीते वह सौदागर शहरमें आके सराय में उतरा और कुटनीको बुलाके बोला कि मेरा जी चाहताहै कि कुछ दिन इस शहरमें रहकर सौदागरीभी करौं और जीभी बहलाओं इस लिये तुमको बुलवायाहै कि कोई बड़ी सुन्दरी कान्ता लाओ जिसके समागमसे जी बहलै और प्रसन्नहोय तो तुम्हैं भी बहुत प्रसन्न करूंगा यह सुन वह बोली कि ऐसी नवीली छवीली लाऊं कि जिसके देखतेही आनंदमें मग्न होजावो और सबदेहगेहकी सुध भूलजावो यह कह बेजाने उसकी जोरूके पास आके कहने लगी कि तेरे लिये आज मैं एक सोनेकी चिड़िया लाईहूं जो तुझसे फांसते

बने तौ फांसले एक सौदागर बड़ा मालदार इस शहरमें आके सरायमें उतरा है और सौदागरीके लिये यहां रहेगा, वह कोई सुंदर सुकुमारी कान्ता भी चाहताहै कि उसके साथ भोग विलासकर आंनद करै, यह सुन वह बोली कि इस्से क्या भलाहै कि एक पंथ दोकांज मैं चलतीहूं और देखो कि उसका माल असबाब कैसा उड़ालातीहूं यह कह अपना शृंगार कर बन-ठन डोलीमें बैठ उस बुढियाके साथ सरायमें जा पहुँची दूरसे देखा तौ जानाकि यहतौ मेरा खाविं-द है यह जानतेही डोलीसे झटपट उतर अपना शृंगार विगाड़ दौड़के उसके पास जा दो थप्पड़ मार कहने लगीकि अरे व्याभिचारी महादुष्ट मैंने तेरे विरहमें तपकर एक२दिन वर्षके समानकाटा है और तेरी यह दशा है कि इतने दिन विदेशमें रंडीबाजी करते २ जी नहीं भरा गाँवमें आया

तौ सरायमें उतरके रंडीबाजी करना चाहताहै; तेरे आतेही मैंने सुनाथा परमेश्वर इस बुढियाका भला करै जिसने मुझे बताया यह कह खाविंदको मारती धाड़ती लेगई और सब माल असबाब धन दौलत अपने वश किया; यह वैसीही मसल हुई है कि, चोरी और सीना जोरी ॥

पांचवीं कहानी ।

एक किसानकी जोरू बड़ी नटखट थी; एक दिन सत्तू मसल उसके लड्डू बना कटोरेमें रख अपने पतिको खानेके लिये खेतपर जाती थी बीच में एक चंगा मुचंडा बीस वर्षका नवा पट्ठा जवान मिलगया उसे देख उसका तन मन ऐसा चुलचुलाया कि उस जवानसे हाहाखा विनती कर पैरों पर हाथ पकड एक उजाडखंडबेहडमें ले जा बडे आनंदसे समागम करने लगी दोघंटे अ-

च्छा भोग बिलास कर उसे छोड़ आप लघुबाधा को गई इस बीच उस जवानने कटोरेको खोलके देखा तौ सत्तूके लड्डू देख पड़े उन सत्तुओंका हाथी बना उसी कटोरेमें रख फिर वैसाका वैसाही ढांक दिया किसानकी स्त्रीने उस जवानको बिदा कर लड्डुओंका कटोरा उठालिया; बिना देखे भाले जाके अपने पातिके आगे रख दिया जब वह खाने को बैठा और कटोरापरसे कपड़ा उठाया तो सत्तूका हाथी देखपड़ा देखतेही क्रोधकर बोलाकि, अरी कुमार्गी खोटी बुद्धिवारी तूने मेरे साथ यह क्या ठट्ठे बाजीकीहै कि सत्तूका हाथी बना मेरे खानेको लाईहै; वह बोलीकि अरे उल्लू बेशहूर मैंने ठट्ठा नहीं किया तेरे प्राण बचायेहैं, आजकी रात मैंने स्वपना देखाकि तेरे पीछे एक मस्तहाथी दौड़ता फिरताहै और तू उसके डरसे कांपता हुआ भागाहै, यह स्वप्ना देख डरके मैं जगपड़ी तो

देखाकि, सबेरा होगया, तब घबराके पंडितकेपास गई और स्वप्नेका वृत्तांत कहा वह बोलाकि,आजकी सांझको तेरे पतिको हाथीसे बड़ा भयहै, यह सुन मैं उसके पैरोंपर शिर धर रोने लगी और विनती करके कहाकि; महाराज कुछ ऐसी कृपा करो कि, मेरा घरवाला हाथीसे बचै, उसने कहा कि, थोड़ेसे सत्तूला जब मैं लेगई तब उसने पानी पढ उस पानीसे सत्तू गूंध हाथी बनादिया और कहा कि,लेजाके अपने पतिको खिलादे तौ उसका बाल बांका न होगा यह सुन उसने प्रसन्नहो वह सत्तूका हाथी खा लिया और अपनी स्त्रीसे कहा कि,शाबास तुझको और तेरे माता पिताको मुझे मरनेसे बचा लिया देखना चाहिये कि, त्रियोंके ऐसे चरित्र होतेहैं कि, राह चलते बेजान पहिचानके साथ मजे उडा ऐसी बातें बनाती हैं इनसे कौन पारपावै परमेश्वरही बचावै तौ बचै ।

छठी कहानी।

एक किसानकी स्त्री रंग रँगीली परमरसीली नई छबीली अति अलबेली बड़ी नटखट और छलबल करनेमें अतिचौकस अपने कोठेपर खड़ी सैरकर रहीथी, इतनेमें एक जवान उठती जवानी मसभीजती महासुन्दर बांका सजीला बड़ी सजधजसे उधर आनिकला, उस किसानकी जोरू को देख उसपर ऐसा मोहगया कि उसकी ओर टकटकी लगाके चित्र लिखासा होरहा और वहां से पैर न उठासका, किसानकी जोरूने जानलिया कि यह मुझपर आशिक होगया यह समझ नीचे उतर उसके पासआ घूंघट निकाल उसके कान से मुंहलगा चलीगई वह जवान उसकाभेद न समझा तब घबराके एक बुढियासे सब बातैं कह भेद पूछने लगा, वह बोली कि इसका भेद यह है कि उसने यह समझाया कि किसी बुढियाको मेरे पा-

स भेजना कि वह तेरी बात मुझसे और मेरी तुझसे कहैगी जवान बुढियासे कहने लगा कि तेरे सिवाय दूसरी कौनहै कि जो मेरी पीरको मिटावै यह सुन बुढ़ियाने उसके पास जा उसका संदेशा कह सुनाया संदेशा सुनतेही उस कान्ताने बुढियाका मुँह कालाकर मोरीकी राहसे निकाल दिया, उसी दशासे बुढ़िया उस जवानके पास चलीआई उसे देख वह ब्याकुल और निराशहो घबराया तब बुढियाने कहाकि तू मत घबरा, मेरा मुँह काला करना और मोरीसे निकालनेका यसबबहै कि तुझे अंधेरीरातमें मोरीकी राहसे बुलायाहै यह सुन वह प्रसन्नहो अंधेरीरातमें मोरीकी राहसे उसके पास जा पहुंचा उसने उसे देख घरके एक कोनेमें लेजा निहला धुला अच्छेर कपड़े पहना पकवान मिठाई पान खिला शराब पिला बड़े प्यारसे लिपट २ आनन्दकी तरंगमें

मजेउड़ा दोनों लपटके सोरहे ऐसे बेसुधि सोये कि देहका सँभाल न रहा. पिछली रात उस स्त्रीका सुसरा खेतपर चला तौ उसके पाससे निकल यह दशादेख उसके पैरकी पाजेब उतार लेगया कि सबेरे अपने बेटेको दिखाऊंगा इतनेमें उसकी नींद जो उचटी और पैर पर हाथपड़ा तौ एकपैर में पाजेब नथी उसने समझ लिया कि यह काम मेरे ससुरेकाहै यह विचार यारको बिदाकर अपने पतिके पास आके जगाकर कहनेलगी कि अरे प्राणप्यारे यहां मच्छरोमें क्या पड़ाहै चल उस जगह ठंढी २ हवा चलरही है वहां हम तुम दोनों मिलके सोवैं, वह नींदका मारा वहांसे उठके उसके साथ वहां जा सोया और यह जानाकि अभी दोचार घड़ी रात गईहै यह न समझाकि सबेरा हुआ चाहता है थोड़ी बिलम्बमें उस की स्त्रीने जगाके कहा कि देखो अपने बापका खो

टा चलन कि जहां हम तुम मिले सोतेथे वहां आके मेरे एक पैरकी पाजेब उतारलेगया संसारमें कहीं ऐसे भीससुरे होते हैं कि जहां बेटा बहू एकसाथ सोतेहों वहां आवें और पैरसे पाजेब उतारलेवैं यह सुन वह आश्चर्यित होरहा जब दो पहरको उसका बाप खेत जोत रोटी खाने घर आया तब वह पाजेब बेटेके हाथपर रख कहने लगा कि देखो बेटा यह बहूके गुण कि न जानिये किसके साथ ऐसी बेसुध सोतीथीकि,मैं एक पैरकी पाजेबउतार लेगया और उसको कुछ चेत न हुआ यह सुन उसका बेटा क्रो- धकर बोला कि बाप तुम्हैं इस बुढापेमें मरनेके दिनोंमें भला बुढ़वस लगाहै उसके साथ सांझसे सबेरे तक तो मैं सोता रहाहूं यह सुन वह बूढा लज्जित हो बहूके आगे हाथ जोड़ कहनेलगा कि बहू मुझसे बड़ा अपराध हुआ तू क्षमाकर वह बोलीकि तुमतौ मेरे बापके समानहो तुम्हैं मेरा

लड़कपन क्षमा करना चाहिये जो हुआ सो हुआ अब इसकी चरचा जानेदो देखा चाहिये स्त्रियोंके चरित्र कि यारके साथ प्यारकर सोके मजाउड़ाये और पति प्रसन्न और ससुरको लज्जित किया इनके चरित्रोंसे परमेश्वर रक्षा करै ॥

सातवीं कहानी।

एकस्त्री अपने प्यारेके साथआनंदकर रहीथी इतनेमें उसके खसम निरे उल्लूने दरवाजा खडका या तब उसकी जोरूने अपने यारको मुर्गीके दर-बेमें बंदरकर मेढा जो घरमें बँधाथा उसे खोलदिया मेढा घरमें चारों और दौड़ने लगा यह घबराई सी बनके दरवाजेको जाखोला उसका खसमबोला किदरवाजा खोलनेमें इतनी देर क्यों हुई वह बोली कि प्यारे आज इस मेढेने मुझे ऐसा खिझायाहै कि मैं मरते२ बची जो मेरा जीना चाहताहै तो इसे मार डाल वह जोरूका गुलाम बेदामका बेजाने बूझे

तलवार निकाल बिना अपराध मेंढको मारनेदौडा और मेढा अपने प्राण बचानेके लिये ऐसा भागता फिरता कि उसकी वारमें न आता भागते २ एक वारमुर्गीके दरबे पर चढके खड़ा होरहा; तब उसने उस बिन अपराधी मेढेपर तलवारका वार किया मेढा तो वह वार बचागया और तलवार दरबेपर जालगी दरबा कटगया उसमेंसे उसकी जोरूका यार निकल आया उसे देख वह बोला कि अरे उल्लू! मैं यमदूतहूं जब कोई मरनहार होताहै तब मैं उसके प्राणनिकालने आताहूं तू इस समय इस मेढको मारडालना चाहताहै; इसालिये मैं इसके प्राण निकालने आयाहूंयहसुन वह तलवार मियानमें करबोला कि हम इसमेढको अब नमारेंगे देखें तू इसके प्राण कैसे निकालैगा वह बोला कि जो तुम इसे नहीं मारते तो हम अपनी यमपुरीको जातेहैं यह कह वहांसे दबे पाँवों चलदिया और वह

घरवाला बिन पूँछका गधा अपनी जोरूसे कहने लगा कि तू अब क्या कहतीहै इस मेढको मारूं या छोडदूं वह कहने लगी कि जानेदो मतमारो पर ऐसा बांधो कि छूट न सके उसके कहनेसे उसने मेढको जकडके बांध अपनी जोरूका प्यार मनुहार करने लगा ॥

आठवीं कहानी ।

एक स्त्री अपने यारके साथ बडे प्यारसे बहार २ के विहार कर २ अति आनंदमें उन्मत्त होरहीथी, इतनेमें उसका प्यारा पति भी आ पुकारा; उसने झटपट दीपक बुझा और यारको अपने पीछे बिठा लौंडीसे कहा कि दरवाजा खोलदे जब उसका पति हिये कपालकी चारों आँखोंका अंधा घरमें आया तो अंधेरा देख बोला कि, यह क्या अंधेर है कि, अभीतक दिया नहीं जलाया ? वह छत्तीसी बोली कि, इस महल्लेवाली

लुगाइयोंके चरित्र देख मेरा जी ऐसा जल रहा है कि अभी इस घरसे निकल जाना चाहिये क्योंकि जैसी संगति तैसी बुद्धि होजातीहै; वह बोलाकि कुशल तो है ! वह बात तो कहो; वह बोली कि आज अभी एक लुगाई अपने यारसे आनंदमें मग्नथी इतनेमें उसका पति आगया उसने झटपट दिया बुझा दिया और यारको पीछे डाल उठ खड़ी हो अपना दुपट्टा इस भांति उसके मुँहपर डाल और शिर छातीसे दबाके जैसे मैं तुम्हारे मुँहपर दुपट्टा डाल तुम्हारा शिर दबाती हूं यारको निकाल दिया उसका यह कहनाथा कि यार निकल बाहर हुआ तब उसने उसकी आंखें खोलके कहाकि ऐसी संगतिमें कभी रहना न चाहिये उसका पति ऐसा मूर्ख हिये की आंखोंका अंधा कहने लगा कि प्यारी तुम्हें पराई बातोंसे क्या आप अपने मनसे भली रहो दूसरेकी भलाई बुराई

न देखो मसल है कि "अपनी करनी पार उतरनी" ऐसे समझ बूझ दोनों चुपहो रहे. ऐसेभी संसारमें लोग बेसींग पूँछके पशु होते हैं जो लुगाइयोंके ऐसे छलमें आजाते हैं॥

नववीं कहानी।

एक रसीले रंगीले तंबोलीकी दुकानपर तबाहीका मारा अफीमी सिपाही आके कहने लगा कि यार मैं दरिद्रके मारे घरबार छोड़ इस शहरमें आ-पडाहूं जो तुम अपनी दूकानमें रातको सो रहने दो और कुछ थोड़ीसी खानेकी सहायता करो तो मैं तुम्हारा बड़ा गुण मानूंगा, और परमेश्वरभी परोपकारका अच्छा बदला तुम्हें देगा तंबोलीने कहा कि यह तुम्हाराही मकान है रहा करो; तब सिपाही रहने लगा उस तंबोलीकी स्त्री बड़ी छत्तीसी कुमागींथी, एक दिन वह सिपाही उस तंबोलीके घरके पास अनायास जा निकला तो उस तंबोलीकी

स्त्रीने हट्टाकट्टा नवीन जवान अफीमी और विदेशी देख कहनेलगी की अरे मियां सिपाही नौकरी करोगे? वह बोलाकि, हम तो नौकरी ढूंढते फिरते हैं; वह बोली कि, जो कोई तुम्हें नौकर रक्खे तो क्या २ काम करोगे? उसने कहाकि, नौकरको क्या उजर, जो मालिक कहै सो करै; वह बोली कि जो तुम हमारी नौकरी करो तो तुम्हें दो रुपये रोज और खाना मिला करैगा; सिपाही बोला कि इससे और क्या, हम इसी सायतसे तुम्हारे नौकर होचुके जो कहो सो करैं; यह सुन तंबोलिनने उसका हाथ पकड अपने घरमें लेजाके अच्छे सुथरे पलंगपर बिठा पहिले तो अफीम खिलाई फिर अच्छे मेवे खिला बहुत सुथरा मीठा सलोना खाना खिलाकर पान खिलाया फिर मीठी२ प्रीतिकी बातें कर उसे छातीसे लगा पलंगपर लेटरही, तब सिपाही भी उठके दो घंटे खूब विलास कर मजा दिखला उसे

बहुत खुश किया जब दोनों सुचित्त हुए तब तंबो-
लिन ने दो रुपये देके कहाकि इसी समय तुम रोज
आया करो और इतनाही काम कर खाना खा दो
रुपये ले जाया करो- सिपाही बहुत प्रसन्न हो, दो
रुपये हाथमें ले खडखडाता तंबोलीके पास आके
कहनेलगा कि यार तेरी दूकानका रहना तो हमें
बहुत फला आज हम दो रुपये रोज और खानेपर
एक बडी सुंदर नवेली छबीली कांताके नौकर
होगये वह बोलाकि किस कामपर? उसने कहा
कि जो काम औरत और मर्दका होता है तंबोली
बोलाकि कल फिर जाओगे? तब सिपाहीने क-
हाकि ऐसी नौकरी पर क्यों न जावेंगे; जहां सुथ-
रा २ खाना और दो घंटे मजा उड़ाना तथा दो
रुपये रोज लाना; यह सुन तंबोली बोला कि
उसका घर कहांहै?उसने कहा कि उस घरका दर-
वाजा तो बडे फेरसेहै जो यहांसे वह देख पड़ताहै;

तंबोली अपने घरका कोठा समझ मनमें कहने लगा कि देखतो कल तुझे कैसा मजा चखाताहूं दूसरे दिन सिपाहीने कहाकि यार अब हमतो अपनी नौकरी पर जातेहैं, ज्योंही वह सिपाही चला और घरमें जा पलंगपर तंबोलिनके गलेमें हाथडाल बैठाथा कि पीछेसे तंबोलीभी आके दरवाजा खटकाके कहा कि कुंडी खोलदो; तब तंबोलिनने सिपाहीको चटाईमें लपेट एक कोनेमें खडा कर कुंडी खोलदी; जब वह भीतर आया तो उसकी छातीसे लिपट बड़े प्यारसे कहनेलगी कि प्यारे आज तुम अच्छे समय पर आयेहो और मुझे भूखभी लगरहीथी, परंतु तुम्हारे विना अकेले खानेका जी नहीं चाहताथा, यह कह लड्डुओंका थाल लाके रख दिया और कहाकि पहिले हम तुम दोनों मिलके उस चटाईमें लड्डू फेंकें देखें किसके फेंके लड्डू

चटाईमें बहुत जातेहैं यह कह दोनोंने बहुतसे लड्डू चटाईमें फेंक दिये, वहां सिपाहीने मजेसे खाये और तंबोलीभी लड्डू खा दुकानपर गया; तब तंबोलिनने सिपाहीको चटाईसे निकाल पलंग पर तीन घंटे आनंदकर दो रुपये दे बिदा किया, सिपाही दोनों रुपये ले तंबोलीके आगे रखके बोला कि यार आज बड़ी कुशल बीती जैसे मैं जाके पलंग पर उस प्यारीके गलेमें हाथ डाल बैठा था वैसेही उसका खसम जा पहुँचा; हमारी प्यारी बड़ीही चतुर औ चालाकहै मुझे चटाईमें लपेट कोने में खडाकर कुंडी खोलदी जब वह घरमें आया तब लड्डुओं का थाल आगे रख पहिले तो बहुतसे लड्डू चटाईमें फेंके सो मैंने खाये पीछे उन दोनोंने खाये जब वह चलागया तब मुझे चटाई से निकाल खूब भोग विलास कर दो रुपये दे बिदा किया

पर क्या कहूं मेरे साले उसके खसमकी सूरत तेरी सी थी ऐसा जानपड़ताथा कि तूहीहै; यह सुन तंबोली जीमें बहुत जला भुना पर ऊपरसे कहने लगा कि अच्छी नौकरी तुम्हारे हाथलगीहै, कभी नागा न करना; वह बोला कि ऐसी नौकरीमें भी नागा करूंगा फिर तीसरे दिन ज्योंही सिपाही उसके घर पहुँचा त्योंहीं तंबोलीभी झटपट दौड़ के दरवाजे पर आ खड़ा हुवा उसकी जोरूने आ- हट सुनतेही एक तरबूजका छिलका सिपाहीके शिरपर रख हौजमें खड़ा करके कहा कि तुम इसमें टहलते रहो देखो तो आज कैसा तमाशा दिखलातीहूं, यह कह कुंडी जा खोली उसका ख- सम घरके भीतर आ चारों ओर देख बोला कि चटाईमें सांप देख पड़ताहै यह कह तलवार निका- ल चटाईके टुकडे २ किये जब उसमें कुछ न देखा तो झखमार पलंगपर आ बैठा और कहने

लगा कि, आज मुझे सबेरे भूख लगीथी इसलिये अभी चला आया, रसोईको तो देरहै जो कुछ घरमें खानेकी चीज हो तो लाओ; उसने अमरूद और नारङ्गीकी भरी टोकरी आगे रखदी और कहने लगी कि, हम तुम इस तरबूजके छिलकेको अमरूद और नारंगियोंसे मारैं देखैं तुम्हारे हाथका निशाना बहुत लगताहै या मेरे हाथका. जिसके हाथका एक निशान बढ-ती लगै वह एकसौ तरबूज जीते; यह कह बहुतसे अमरूद और शंतरे तरबूजके छिलके पर फेंके सो सिपाहीने मजेसे चक्खे जब तंबोली दुकानपर गया तब सिपाही तबाहीसे बचके हौजसे निकल अपने समागमसे तंबोलिनको दो घंटे तक मजा चखा दो रुपये ले तम्बोलीके पास आके कहने लगा कि, यार आज तो प्राण जा चुकेथे पर हमारी प्यारीकी चतुराई और चौकसीसे बचगये; वह

बोला कैसे ? उसने कहा कि, आज ज्योंही मैं पलंग-पर जाबैठा त्योंही मेरा साला मेरी प्यारीका पति (मानौ तुहीथा) जा पहुँचा मेरी प्यारीने तरबूजका छिलका मेरे शिरपर रख मुझे हौजमें खड़ा करदिया और वहीं अमरूद और शंतरे मुझे पहुँचाती गई सो मैंने खूब चक्खे जब वह साला मुँह काला कर गया तब मैं हौजसे निकल प्यारीके छिपे हुए हौजमें दोघंटे तक खूब जोरसे अपने अंगूरी खोशेके दाने भरे और उसे प्रसन्नकर रुपये ले तेरे पास आ पहुँ-चा; तम्बोली बड़ा क्रोधकर मनमें कहने लगा कि, यह मुर्गा मेरीही जोरूको बिगाड, दो रुपये लेताहै और मेरे मुँहपर मुझे गालियां देताहै देखैं तो कल्ह तेरा दरवाजाही जलादूंगा कि, तू जल मरे और मेरे जीकी जलन मिटै, पर ऊपरसे बड़े हित प्यारकी बातें करता रहा, चौथे दिन फिर सि-पाही उसके घर गया तब पीछेसे उसने जाके घर-के चारों ओर परछतियोंमें आग लगादी तब तो

उसकी जोरू सिपाहीको सन्दूकमें बंदकर ताला लगा शिर पीट२पुकारने लगी कि,अरे सिडी सौदाई गधे तूने अपना घर जलाया सो जलाया मेरे बापके घरका यह सन्दूक तो हटा निकाल नहीं तो मेरे बाप,भाई मेरी और तेरी दोनोंकी न जानिये क्या दुर्दशा करेंगे; यह सुन उसने दौडके संदूक शिरपर घर बाहर धरगया और उसकी जोरू संदूक कहारोंसे उठवा अपने बापके घरको चलदी बीचमें सिपाहीको संदूकसे निकाल एक बागमें ले जाके सांझ तक उसके साथ मनमाना बेखटके भोग विलास किया;आनंदसे मजे उडा सौ अशरफियां सिपाहीको देके बिदाकर आप अपने बापके घर चली गई, और यहां तंबोलीकी यह दशा हुई कि, जो कोई आग बुझाने आता तो उसे बुझाने न देता इस समझसे कि, वह सिपाही जलके मरजाय जब सारा घर जलके भस्महोगया तब वह दूकान

पर आबैठा, इतनेमें सिपाहीभी आगया और सारा वृत्तांत वहाँका सौ अशरफियां दिखलाके कहने लगा कि, भाई तेरी दूकानका रहना! तो हमें ऐसा फला कि,जन्म भरको सुचित्त होगये.यह सुन तंबोली कहने लगा कि, यार जो ये बातें कहीं कहनी पड़ें तो कहो कि नहीं? वह बोला कि सांच को आंच क्या,हम सब सच२कहदेवें; यह सुन तंबोली सिपाहीको साथले अपनी सुसरारमें जा पंचायत जोडके कहने लगा कि, मेरी बात तो तुम झूठ मानोगे इस मेरी जोरूका वृत्तांत इस सिपाही से पूछलो;तब पंचोंने सिपाहीसे पूंछा कि, कहो भाई सिपाही क्या बातहै ? वह अफीमके नशेकी झोकमें शिर झुकाये कहने लगा और वह तंबोलिन कोठेपर खडे २ सुनरहीथी और यह चाहती थी कि, जो यह आंख उठाके मेरी ओर देखै तो कुछ बात बनालूं पर उसने अफीमके नशेकी

झोंकमें आंख न उठाई शिर झुकाये कहता रहा; जब सारा वृत्तांत कह चुका पीछेसे यह कहा कि, जब बागमें जाके सन्दूक खोला तो मैं उठ खड़ा हुआ;बतलानेमें जो आंख ऊपर उठी तो कोठेपर तंबोलिनने दांतोंसे जीभ दाब हाथसे मना किया तब सिपाही बोला कि,इतनेमें मेरी आंखें खुलगई तो कुछ न था, यह सुन पंचोंने कहा कि, स्वप्न कहतेहो कि,सचमुच ? वह बोला कि, मुझ बिचारेके नसीबेमें ये सुख कहां झोपड़ेमें सोवें महलोंका स्वप्न देखते हैं तब पंचोंने तंबोलीको बहुत कायल किया कि; तू इस भली मानुष को झूठा कलंक लगाताहै;यह सिपाही बड़ा सच्चा और सीधाहै; जो सच्चाथा सो कह दिया तंबोली लज्जितहो सब पंचों और अपनी जोरू और उसके भाइयोंके परौं पड़नेलगा कि, मेरी तकसीर माफकरो ऐसेही

तिरियाचरित्र होते हैं कि आंख देखे सब कुछ करे पर पकड़ी न जावै ॥

दशहवीं कहानी।

एक लुगाई छटी हुई छत्तीसी छल बलमें बड़ी चौकस एक नये जवान बनियेकी दुकानपर शक्कर मोल लेनेगई; बनियां उसकी उठती जवानीका रंग रूप देख उसपर आशिक होगया और उस लुगाई-काभी जी उससे ऐसा फँसा कि, देहगेहकी सुध बुध नहीं रही; निदान बनियेने सेरभर शक्कर तौलके उसकी चादरके कोनेमें बांधदी और मीठी २ बातें कर उस लुगाईका हाथ पकड खडसारके कोनेमें लेजा भोग विलास किया; शक्करके मजे चखाने लगा इस बीच बनियेके शागिर्दने बिचारा कि, यह व्यभिचारिणी, शक्कर मुफ्त लिये जातीहै यह समझ शक्कर तो चादरसे खोलली और धूर उसमें बांधदी

जब वह लुगाई बनियेके समागमकी मिठाई जीभर खा चुकी तब वहांसे बाहर निकल चादर उठा घरको दौड़ी; घरमें पहुँच चादर धर शक्कर भरनेके लिये बासन लेने गई. और उसके खसमने चादर खोली तो उसमें धूर देख बोला कि अरी अभागिनी! तू शक्कर लेने गईथी कि, धूर!वह बोली कि, धूर लानेका यह कारणहै कि, मैं जब बाजारमें पहुँची तो देखा कि, एक मतवाला बैल चारों ओर दौड़ता फिरताहै और सारे बाजारके लोग उसके डरसे इधर उधर भागे जाते हैं; उसके डरसे मैंभी भागी तो चादरके कोनेसे पैसे खुलके गिरपड़े उस समय मारे घबराहटके पैसे चुननेका तो सावकाश मुझे न मिला पर उस जगहकी धूल समेट चादरमें बांधली उससे पैसे ढूंढके निकालदे तो मैं फिर जाके शक्कर ले आऊं. उस महाकच्चे पक्के मूर्खने बहुत धूल छानी उड़ाई पर पैसे न पाये तब

कहने लगा कि, पैसे गये तो गये मेरी प्यारीके प्यारे प्राण तो बचे, इस प्रकार धैर्यदे उसका संतोष किया ॥

ग्यारहवीं कहानी ।

एक सौदागर सब मुल्कोंकी सौदागरी करता था, जब वह विदेशको जाने लगा तो अपनी प्यारी से कहने लगा कि, देखो जबतक हम न आवें तुम बहुत सावधानीसे रहना और किसीतरहका मलाल न करना ईश्वर चाहेगा तो मैं जल्द आऊंगा औरत बोली कि जबसे मैंने होश सम्हाला तबसे मर्द का मुँहभी न देखा;यह सुन वह तो बिदा हुआ इधर यंह एक कुटनीको बुलाकर कहनेलगी कि, अम्मा जान! वह तो मरे जिये जाने कब लौटें पर मैं बिना दिलवरके किस प्रकार रहसक्ती हूं ? इतनेमें एका-यक चौबारे परसे जो उसकी दृष्टि बाजारकी ओर पड़ी तो क्या देखतीहै कि एक मस भीजत जवान

खड़ा हुआ है जिसकी तिरछी चितवन देखतेही प्रीतिका फंदा पड़गया झट उस कुटनीको हाथ पकड़ दिखाया कि, अम्माजी यदि तुम मुझे इससे मिलादो तो मेरे प्राण रहेंगे नहीं तो मैं अधमरी तो होही रहीहूँ रहीसही दो एक दिनमें मरभी जाऊंगी कुटनीने कहा कि मेरी लड़ैती धैर्य्य रख मैं तेरे लिये आस्मानके तारे भी लासक्ती हूं यह कितनी बड़ी बात है यह कह वहांसे चल उस जवानसे आकर कहने लगीकि भला ऐसाभी कोई करताहै कि जो भलेमानसोंके महलोंपर निगाह लगाये खड़े हो? उसने कहा कि मैं तो अपने रास्ते जाता हूं मुझे क्या जो किसीसे निगाह लगाऊं पर यह तो कह कि वह कौन है? जो धावडीमें खड़ी मुझे इशारेमें बुला रही है उस बदजातको नहीं समझाती तब बुढ़िया पैरों पड़ कहने लगी बेटा हजारी उम्मर बलैयालूं पुतुवा क्रोध न करो और मेरी

बातको सुनो उसने मुझे तुम्हारे पास भेजा है और बगैर तुम्हारे नीर बिन मीनकी भांति तड़फ रही है कृपाकर रतिदान दो खैर उसके कहनेसे उसने उत्तर दिया कि, हम ऐसा तो नहीं करते परंतु तुम्हारे कहनेसे स्वीकार करते हैं यदि उसको हमारी चाहना है तो हमारे स्थानपर आवे बुढ़ियाको अपने मकानका पता बतला वह चल दिया उसने जाकर भेद कहा वह सोलह शृंगार बारह आभूषण साज प्यारेके मिलनेकी घड़ी गिनने लगी जब पहर रात गई तो कुटनीको साथले उसके मकानपर जाकर उससे कहने लगी कि; हेप्यारे तुम्हारे नेत्रोंकी कटारीसे मैं घायलहूं मुझको अब कुबूल करो उसने कहा कि देखो! एक तो तुम बड़े सौदागरकी बेटी, दूसरे तुम्हारा पति करोड़पती तुमको ऐसी बात कहना योग्य नहीं यह सुन वह अधीर हो उसको आलिंगनकर कहनेलगी कि इस

समय बिलम्ब करोगे तो मैं अपना प्राण त्याग कर दूँगी उस पुरुषने उसकी ऐसी व्यवस्था देख उस्को स्वीकार किया, तबतो इसी प्रकार नित्त प्रति आनंद उठाने लगी और पहररात गये जाती और एकघड़ीके अँधियारे प्रातः चली आती थी निदान जब एक वर्ष व्यतीत होनेपर उस्का पति आया और देश २ की अनोखी वस्तुयें जो सौगात लाया था वे उसे देने व दिखलाने लगा मगर इसको तो कुछ और ही धुनि लग रही थी जब एक पहर रात्रि व्यतीत हुई तो अपने समयानुसार उसी यारके स्थान पर गई तब उसने कहा कि, मैंने सुना है कि तेरा पति आगयाहै; यदि तू अपने पतिको मार मेरे पास आवे तो रक्खूं नहीं तो मैं आजसे तेरा प्यार न करूंगा वैसे जैसा तुझे सूझ पड़े वैसा कर यहसुन वह तुरंतही अपने मकानको लौट गई; जहां चौबारेमें

उसका पति पड़ा हुवा मार्गका श्रमित निद्रामें अचेतसोरहा था जाकर उसके गलेपर छुरा फेर दिया और उस्का काम तमाम किया फिर वहांसे चल अपने प्यारे मित्र के गलेसे लिपट कर कहनेलगी कि, लो तुम्हारे लिये मैं अपने घरवालेको जानसे मार आई तब उसने कहा कि, छोड़ हत्यारी अलगहो तूने अपने पुरुषके मारनेमें तो विलम्ब न किया और कोई तेरी प्रीतिका क्या विश्वासकरै, यह सुन वह वहांसे हार झकमार कुटनीके पासआ उसे सम्पूर्ण वृत्तान्त सुनाय कहने लगी कि, अब मुझे बताओ सो मैं करूं; उसने कहा कि, अगर वह निगोडा प्रीति छोडताहै तो क्या और आदमियोंका टोटाहै यों समझाय उसे साथले रेल्वे स्टेशनपर जा एक मुसाफिरसे कहने लगी कि, मेरी बेटीको अगर तुम लेजाओ तो मैं तुम्हें देडालूं; उसने कहा कि, और पूंछना क्या, मेरे पास कोई रंडी नहीं, भला

योंही सही यों कह बुढियाको १००) रुपये दे उस सुंदरीको साथले मार्गीहुआ, देखिये स्त्रीचरित्र ऐसी स्त्रियोंके विश्वासपर जो पुरुष रहतेहैं वह प्रारब्ध गँवातेहैं फिर कैसी कठोर कि पतिको मार एक यारको छोड़ दूसरे रास्तेगीरके साथ चलीगई ॥

बारहवीं कहानी ।

एक शहरमें एक बादशाह रहताथा वह अक्सर रातको फकीरी वेष बनाये शहरकी चौकसी किया करताथा. जब एक गलीमें गया तब उसे क्या सुनाई पड़ा कि एक जुलाहा अपनी औरतसे कह रहाहै कि सुनो प्रिये, तुम जबतक मेरे पासहो तब तक मेरीहो, आंख ओट मुझे तुम्हारा एतबार नहीं और वह मर्द बड़ा बेवकूफहै जो अपनी जवान जोरूको अपनी सुसरालमें छोड़ रक्खे बादशाहने यह सुनकर मनमें कहा कि हमारीभी

बेगम तो अपनी माँके घरहै और शादी होजाने के बाद हमारे यहां नहीं आई निदान बादशाह अपने घोड़े पर सवारहो अपनी सुसरालको रवाना हुआ वहां पहुँच सरायमें उतर यह विचार करनेलगा कि किसप्रकार परीक्षाकरूं उसने अपने मनमें शोचा कि वैसे बादशाहीमहल में मुझे कौन घुसने देगा इसलिये थोडीसी लकड़ी का गट्ठा बांध शिर पर रख जहां उसकी बीबीका बावर्चीखानाथा वहां गया उसे देख बावर्चीने कहा कि, लकड़ीवाले लकड़ियोंकी क्या कीमत है उसने जवाब दिया कि बाबा मुझे रतौंधी आती हैं और शामका वक्त है इसलिये रात भर मुझे पड रहनेकी जगहदो सुबह तुम जो दामदोगे सो मैं ले कर चला जाऊंगा बावर्चीने कहा अच्छा इसजगह पड़ रहो; यह एक कोनेमें पड़रहा; जब ग्यारह बजे रातका वक्त हुआ तब शहरका कोतवाल आया

और जहां वह लकड़िहार पड़ाथा उस कमरेको खोला तो उसमें संसारी सुखके सब पदार्थ रक्खे थे और सुन्दर फेनसी सेजभी बिछीथी उसपर वह पड़रहा जब ठीक आधीरातका समय आया तो ऊपर छतपरके कमरेसे जीनेकी राह छमछम शब्द सुनाई पड़ा लकड़िहारेने देखतेही पहिंचान लिया कि यह तो हमारीही स्त्री है और वह स्त्री उसी कमरेमें जिसमें कोतवाल लेटाथा, जाकर उससे लिपट कर बोली कि, प्यारे! आज तो खूब शरदी पड़रहीहै आज प्रीतिसे चिपटकर सो रहो; कोतवालने जो यह नखरा सुना तो चौगुना चाव बढ़गया फिरतो पलंगपर अच्छी धमाचौकड़ मची यकायक एक पाया पलंगका टूट गया और रंगमें भंग होगया समय ऐसाथा कि, वर्णन नहीं हो सक्ता कोतवाल इस फिक्रमें इधर उधर तलाश करने लगा कि, कोई चीज मिले तो सहारा लगाके

पलंग चौरसकर अपनी दिलरुबाके साथ ऐश पूरा करूं क्योंकि, हिन्दी मसलहै कि "भूखे भले अध पेटे नागा" इतनेमें देखता क्याहै कि कोनेमें एक आदमी पड़ाहुआहै उसको उठाकर कहा कि अगर तुम इस चारपाईका कोना अपनी पीठपर रक्खे रहो तो तुमको चार आने दिये जावेंगे यहतो परीक्षा लेनेको गयाहीथा हाथ पैरोंको जमीनमें जमा पीठ पर पलंगकी पाटी साधलिया वे दोनों आनंद कलोल करने लगे; कोतवालके हाथका झटका ऐसा बैठा कि बेगमकी नथ टूट गई तो वह बड़ी रंजीदा हुई और कहने लगी कि देखो मेरे खाविन्द पर इसवक्त कोई बड़ी मुसीबत पड़ रहीहै यह क्या मालूमहै कि खाविन्द केही पीठपर दोनों लाशोंका बोझाहै. वक्त चार बजेका हुआ तब कोतवाल तो अपनी कोतवालीको रवाना हुआ और यह सारी रातकी जागीहुईथी सोतीरही जब सुबह

हुई तो उठकर उस मर्दपर निगाहकी तो पहिंचाना कि; यह तो मेरा खाविंदसा मालूम होताहै पहरे- वालोंको ताकीदकी कि, इस मर्दको बाहर न जाने देना और एक रुक्का कोतवालको लिखा कि, जल्द आओ कोतवाल हाजिर हुआ उसने कहा कि अगर तुम मेरी और अपनी जिन्दगी चाहतेहो तो इस म- र्दको इसी वक्त शूलीदेदो और इसकी आंखें निकल वाके मेरे पास लाओ तब मुझे सब्र होगा. कोत- वाल तो बेदामका गुलामथा, कहने लगा कि जो हुक्म.उसी वक्त जल्लादोंको बुलाकर सुपुर्द किया और कहा कि इसकी आंखें निकाल लाओ वे उस को साथ लेकर जंगलमें ले गये और मारनेका इरादा किया; बादशाहने उनको अशर्फियां देकर टाल दिया और सरायमें आ अपने घोड़पर सवारहो अपने देशको रवाना हुआ जल्लादोंने हरिणकी आंखें निकाल कोतवालकी मार्फत बाद-

शाहजादीके पास पहुँचादीं मगर कोतवालने कहा कि तुमने नाहक उस बेगुनाहकी जानली वह तुम्हारा खाविंद नहीं था, वह बादशाही छोड लकड़ीबेचने क्यों आता. शाहजादीने कहा कि कोईहो जिसने हमारा तुम्हारा हाल देखाथा दूसरों पर रौशन करता उसका मारा जानाही बेहतरथ। और मुझे तो अपना खाविंदही मालूम होताथा खैर कुछभी हो तुम कहो सोई सही इधर बादशाहने अपने शहरमें पहुँचकर एक पत्र अपनी सुसरालको लिखा कि हम अमुक तारीखको बिदा कराने आवेंगे इधरसेभी मंजूरी पहुँची बादशाह बडी तैयारीके साथ रुखसत करानेको सुसरालमें दाखिल हुआ इधर कोतवाल अपने मामूल के मुवाफिक बादशाहजादीके पास गया औरकहा अबतो तुम जाओगी और यह मिसरा पढके सुनाने लगा "प्यारी चली सासरे फेर कभीहैआना।

तुम रखना मेरी याद भूल नाजाना" शाहजादी बोली कि तुमतो मेरी आंखोंकी पुतली व कलेजा हो मैं सौ बहाने कर बहुत जल्द तुमसे मिलूंगी निदान वक्त रुखसतका आया सवारी तैयार हुई इस बादशाहने कहा कि दासी तो पालकीके साथ रहेगी अगर आप और किसी मातबर आदमी खासको पालकीके साथ भेजें तो अच्छा हो बादशाहने कहा कि यह शहरका कोतवाल और मेरा खानदानी है यही आपको पहुँचा आवेगा कोतवालने जो यह आज्ञा सुना तो अँगरखे के बंद टूटगये मारे खुशीके फूला न समाया और हमराह हुआ रास्तेमें इस बादशाहने कहाकि तुम पालकी के साथ रहो और खाने पीनेकी चौकसी रक्खो मैं अपने लोगोंकी सम्भालमें रहूंगा; जब रातको रास्तेमें मुकामहुआ तो कोतवालको जनाने खेमे की चौकसी सौंपी गई. चौकसी क्या थी पलँगकी

आबादीथी जब सब लोग इधर उधर सोरहे तब कोतवालभी शाहजादीके पास जा सोया. इसी प्रकार ७ मुकाममें अपने शहरमें पहुँचे. किलेमें उतर कर कोतवालको उसी बेगमके मकानमें रहनेका हुक्म हुआ और उस रातभी कोतवाल साहबने आनंद मचाया सुबह जब बादशाह दरबार में बैठे तो अपनी बेगमको सहित कोतवालके बुलवाभेजा, बेगम दरबारमें आनेको ठिठकने लगी बादशाहने कहा कि हमारा हुक्म है तुम दोनों हमारे सामने आकर खड़े हो जब बेगम और कोतवाल सन्मुख आये तब बादशाहने पूछा कि वह लकड़ी बेचनेवाला, जो तुम्हारे शहरमें गयाथा, उसको बेगम साहिबाने मारडालने का हुक्म दियाथा सो अब उसी के हुक्मसे तुम दोनोंकी गर्दन मारी जातीहै, इतना कह उसी वक्त जल्लादोंको हुक्म दिया कि मेरे

सामने इन दोनोंकी बोटी २ अलग कर कौवों को डालदो जल्लाद् उसी वक्त हुक्म बजालाये त्रियाचरित्र अपार है कहांतक लिखें।

इति श्रीत्रियाचरित्र (प्रेमनदी) समाप्त।

"श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) यन्त्रालय-बंबई.

विक्रय्यपुस्तकोंकी संक्षिप्त सूची ।

स्त्रियोपयोगी ।

नाम पुस्तक	की. रु. आ.
नलदमयन्ती चरित्र (दमयन्तीका पातिव्रत पालन, सत्यता और स्वयंवरकी कथा)	०—८
कन्याहितकारिणी	०—२
पतिव्रताधर्मप्रकाश	०—४
नारीशिक्षा.	०—३
त्रियातिमिरनाशक (स्त्रीशिक्षा) ...	०—४
वामामनरंजन (स्त्रियोंकीशिक्षामें परमोपयोगी है)	०—४
नारीधर्म (छन्दबद्ध)	०—२

क़िस्सा—कहानी ।

नाम पुस्तक	की. रु. आ.
सिंहासनबत्तीसी	०—७
बैतालपच्चीसी	०—४

शुकबहत्तरी ... ... ०—६
हातिमताईका क़िस्सा ... ... १—४
मोहनीचरित्र (फिसानाअजायब क़िस्सा) ०—८
गुलबकावली (बहुत रसीली) ... ०—१०
गुलसनोबर (दिलचस्प किस्सा) ... ०—१०
आनंदोद्भवनाटक (बड़ा मजाहै) ... ०—१
चहारदरवेश (बाग़ोबहार) बुद्धिचमत्कार करनेवाले चार योगियोंका वृत्तांत। १—०

आल्हा।

आल्हखण्ड—(सुन्दर अक्षर काग़ज़में आल्हाऊदल पृथ्वीराज कनौजी आदि क्षत्रियों का उद्भट युद्ध ५२ लड़ाईमें) ... २—४
आल्हारामायण लंकाकांड (रामरावणकी लड़ाई) ... ... ०—८
आल्हामहाभारत सभापर्व (द्रौपदीचीर हरण) ... ... ०—१०

आल्हारामायण (सातोकाण्ड) बहुत बड़ा ४—०

राजनीति ।

शुक्रनीतिभाषाटीकासहित (राजप्रबन्ध व नीति) ... ... १—८

भर्तृहरिशतकत्रय भा.टी. (नीति, शृंगार, वैराग्य) ... ... १—०

चाणक्यनीति भाषाटीका दोहासहित जिल्द ०—८

विदुरनीतिहिंदुस्थानी यक्ष प्रश्नोंके सहित ०—४

विदुरप्रजागर (राजनीति) मारवाडीभाषा ०—८

राजनीति पंचोपाख्यान भाषा ... ... ०—७

कुण्डलिया गिरिधररायकृत (सामायिक नीति वेदान्त संयुक्त) ... ... ०—४

संपूर्ण पुस्तकोंका 'बड़ा सूचीपत्र' अलगहै आधआनेका टिकट महसूलके लिये भेजकर मुफ्त मँगालीजिये.

पुस्तकोंके मिलनेका ठिकाना—

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस—मुंबई.